मसीही संदेश

(रेडियो प्रवचन)

लेखक :

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स नं० ३८१५
नई दिल्ली-११००४६

भाग दस

प्रथम संस्करण १९८०

मुद्रक :
प्रिन्ट इण्डिया,
मायापुरी, दिल्ली

भूमिका

मैं इस पुस्तक को "मसीही संदेश" इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि जिन पाठों को इस पुस्तक में आप पढ़ने जा रहे हैं वे उन वस्तुओं पर आधारित हैं जिनका सम्बन्ध मसीह से है। मसीह की वस्तुएं वास्तव में बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं। उसका सुसमाचार हमें बचाता है; उसके नाम में हमें उद्धार मिलता है; और उसका लोहू हमारे सब पापों को धोता है। आज के इस युग में, जबकि मसीह की वस्तुओं का महत्व लोगों के निकट प्राय: निरन्तर घटता जा रहा है; उसके सुसमाचार के अतिरिक्त बहुतेरे अन्य सुसमाचार प्रचार किए जा रहे हैं, मसीह के नाम के अतिरिक्त बहुतेरे अन्य नामों को ऊपर उठाया जा रहा है, और मसीह की कलीसिया के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न कलीसियाएं बनाई जा रही हैं, इस प्रकार की पुस्तक की बड़ी ही आवश्यकता है।

मेरा विश्वास है, कि आप इस पुस्तक को बाइबल के प्रकाश में पढ़ेंगे। हो सकता है, इसको पढ़कर आपको कुछ ऐसी वास्तविकताओं का ज्ञान हो जाए जिनके बारे में अब तक आपको पता न हो। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना ८:३२)। और एक अन्य स्थान पर उसने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो कोई मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना ८:१२)। यदि आप मनुष्यों के बनाए धर्मोपदेश और विधियों की ज़ंजीर में कैद हैं; यदि आप जगत के रस्म-ओ-रिवाज़ और रूढ़ियों के अन्धकार में खोए हैं, तो मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक आपको उस सच्चाई और ज्योति के निकट लाने में सफल होगी जिसकी हम सबको आवश्यकता है। इसी आशा के साथ प्रस्तुत पुस्तक आप को पढ़ने के लिए दी जा रही है।

जून ३०, १९७९. —लेखक

लेखक तथा रचना

भाई सनी डेविड के रेडियो प्रवचनों की इस दसवीं पुस्तक का विषय मुख्य रूप से मसीह है। इस सच्चाई को दृष्टिकोण में रखकर यह कहना कुछ अनुचित न होगा, कि यह विषय बड़ा ही गहरा और विशाल है। क्योंकि कौन मनुष्य परमेश्वर के पुत्र के विषय में सब कुछ विस्तार से लिख सकता है? यद्यपि यूहन्ना ने उसकी जीवनी को लिखा, किन्तु अन्त में वह भी इस प्रकार कहता है, "और भी बहुत से काम हैं जो यीशु ने किए, यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।" (यूहन्ना २१ : २५)।

निःसंदेह, जब आप प्रस्तुत प्रवचनों को पढ़ेंगे तो आपका ध्यान इस बात पर अवश्य जाएगा कि भाई डेविड ने इस पुस्तक में कुछ ऐसी महत्वपूर्ण बातों को उभारकर हमारे सामने रखा है, जिनका सम्बन्ध मसीह के जीवन और शिक्षाओं से है। और आप इसका भी अनुभव करेंगे कि इन बातों का सम्बन्ध हमारे जीवनों से बहुत गहरा है।

इन प्रवचनों में न केवल विश्वास के महत्व को ही दर्शाया गया है किन्तु यह भी दिखाया गया है, कि हमें एक ऐसे मज़बूत विश्वास की आवश्यकता है जिसके फलस्वरूप हम मसीह की प्रत्येक आज्ञा का पालन करें। क्योंकि यूं तो अनेकों लोग मसीह में विश्वास रखते हैं, परन्तु उनमें से हर एक उसकी आज्ञाओं को मानने को तैयार नहीं होता। इसमें संदेह नहीं कि वे विश्वास करते हैं, परन्तु उनका विश्वास कर्म-रहित है और इसलिए मरा हुआ है। मसीह ने हमारे प्रति अपने प्रेम को अपने प्राणों को देकर प्रगट व प्रमाणित किया। और यदि हम

उस से प्रेम करते हैं, तो उसके प्रति अपने प्रेम को हम केवल उसकी आज्ञाओं को ही मानकर प्रकट तथा प्रमाणित कर सकते हैं और केवल तभी हमारा उद्धार हो सकता है और हम उस आशा के वारिस हो सकते हैं जो हमें केवल मसीह में मिलती है।

इन प्रवचनों में मसीह का प्रचार किया गया है। परन्तु मसीह और मनुष्य के लिए उसकी इच्छा को हम कदापि अलग नहीं कर सकते। सो इसलिए मसीह की इच्छा और उसके द्वारा दिए गए उद्धार पाने के नियमों का भी इन प्रवचनों में उल्लेख किया गया है, और इस प्रकार मसीह का प्रचार पूर्णत: से किया गया है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के आठवें अध्याय में हम देखते हैं, कि फिलिप्पुस ने खोजे को मसीह का प्रचार किया, किन्तु इस प्रकार उसने खोजे को मसीह की इच्छा का प्रचार किया, और यह सच है जैसा कि हम उक्त विवरण से देखते हैं। और इस सम्बन्ध में आज भी यही सच्चाई है। इसलिए जब कोई मसीह का प्रचार सुनता है और उसमें विश्वास लाता है तो उसे चाहिए कि वह उसकी आज्ञाओं का पालन करे। सो हमारी यही प्रार्थना है, कि इस पुस्तक को पढ़कर आप अपने जीवन में इसी निष्कर्ष पर पहुचें।

जे. सी. चोट
नई दिल्ली

नवम्बर १, १९७९

अन्य उपलब्ध रचनाएँ :

खाली कब्र
१५ प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२० लघु रेडियो संदेश
मुक्ति के संदेश
हम किस के पास जाएँ ?
यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे ?
सुसमाचार बोनेवाला
जीवन के वचन

सुनिए !

सत्य-सुसमाचार के साप्ताहिक प्रसारण रेडियो श्रीलंका द्वारा २५ तथा ४१ मीटर बैण्ड पर :

मंगलवार —: रात ६ बजे से ६.१५ तक
बृहस्पतिवार —: रात ६ बजे से ६.१५ तक
शुक्रवार —: रात ६ बजे से ६.१५ तक
शनिवार —: रात ६.४५ से १०.०० तक

वक्ता : श्री सनी डेविड

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. मसीह का सुसमाचार	... १
२. मसीह की कलीसिया	... ६
३. मसीह का नाम	...११
४. मसीह का बपतिस्मा	...१६
५. मसीह के विभिन्न मूल्यांकन	...२१
६. मसीह के दावे	...२६
७. मसीह का क्रूस	...३१
८. मसीह की महत्वपूर्ण आज्ञा	...३६
९. मसीह का अंगीकार	...४२
१०. मसीह का प्रेम	...४८
११. मसीह का जीवन	...५४
१२. मसीह की मृत्यु	...६०
१३. मसीह का पुनरुत्थान	...६५
१४. मसीह का दोबारा आना (१)	...७१
१५. मसीह का दोबारा आना (२)	...७६

मसीह का सुसमाचार

मित्रो :

यूँ तो ऐसी बहुतेरी बातें हैं जिनके बारे में अभी हम विचार कर सकते हैं; अर्थात् हम उस भूकम्प के बारे में विचार कर सकते हैं जो अभी कुछ ही समय पूर्व पृथ्वी पर आया था और जिसके कारण हज़ारों लोग मर गए या बेघर हो गए। या फिर हम हवाई जहाज़ की उस दुर्घटना के बारे में कुछ कह सकते हैं, जो हवा में उड़ते-उड़ते अचानक आग का एक गोला बन गया और उसमें बैठे दो सौ से भी अधिक यात्री जलकर राख हो गए। कदाचित् हम रेल-गाड़ियों में बढ़ती हुई डकैती की घटनाओं के बारे में कुछ कहें या शायद हम उस बड़े टिड्डी दल के बारे में कुछ बातें करें जो आजकल अनेकों स्थानों पर फसल को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। इसी प्रकार की और भी बहुतेरी बातें हैं जिनके बारे में हम आपस में बात-चीत कर सकते हैं। किन्तु, इस तरह की सभी बातों को सुनकर हमें कष्ट और दुःख ही होता है, इस प्रकार की बातों को सुनकर हमें कोई प्रसन्नता नहीं मिलती। परन्तु हम चाहते हैं, कि कोई हमें प्रसन्नता का समाचार दे, खुशी की खबर दे। हम सुनना चाहते हैं, कि किसी ने हमारे लिये कुछ भलाई की है; हम सुनना चाहते हैं, कि किसी ने हमारी बड़ाई वा प्रशंसा की है; हम जानना चाहते हैं कि कोई हम से प्रेम करता है और हमारी खुशी व भलाई के लिए सब कुछ कर सकता है। अर्थात्, हम सुसमाचार सुनना चाहते हैं, हम खुशी की खबर सुनना चाहते हैं।

और मैं आपको आज सचमुच में एक बहुत ही बड़ी खुशी की खबर

देने जा रहा हूँ ! मैं आपको मसीह का सुसमाचार सुनाने जा रहा हूँ—क्योंकि मैं सोचता हूँ कि हम में से किसी के लिये भी इससे बड़ा सुसमाचार और कोई नहीं हो सकता, कि परमेश्वर ने हम में से हर एक से इतना अधिक प्रेम किया कि हमें नरक के अनन्त विनाश से बचाने के लिये उसने हमारे पापों के कारण स्वयं अपने पुत्र मसीह को दोषी ठहराकर, उसे हमारे पापों का प्रायश्चित बनाया, और उसे काठ के बने एक क्रूस के ऊपर सारी मानवता के लिये बलिदान कर दिया ! पवित्र बाइबल में लिखा है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

क्या यह सचमुच में अद्भुत सुसमाचार नहीं है ? क्या यह वास्तव में महान् सुसमाचार नहीं है, कि परमेश्वर ने हम सब से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमें नाश होने से बचाने के लिये हमारे पापों के कारण अपने पुत्र को दोषी ठहराकर उसे हमारे लिये दे दिया, ताकि हम नाश न हों परन्तु उसके द्वारा अनन्त जीवन पाएँ ?

पौलुस, यीशु का एक प्रेरित, अपने मसीही भाईयों को एक जगह लिखकर कहता है, "हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूँ जो पहिले सुना चुका हूँ, जिसे तुमने अङ्गीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।" (१ कुरिन्थियों १५ : १—४)। सो क्या है सुसमाचार ? अर्थात्,

यह, कि यीशु मसीह हमारे पापों के कारण मर गया, और गाड़ा गया और फिर जी उठा ! यदि मसीह केवल मारा व गाड़ा ही जाता तो वह किसी भी अन्य मनुष्य से बढ़कर कोई विशेष महत्व न रखता, किन्तु क्योंकि वह न केवल मारा वा गाड़ा ही गया परन्तु वह फिर जी उठा, इसलिये इस से यह प्रमाणित हो जाता है, और हम निश्चित रूप से जानते हैं, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और इसलिये उसका बलिदान एक स्वर्गीय वा ईश्वरीय बलिदान था और हमारा उद्धारकर्ता एक ज़िन्दा उद्धारकर्त्ता है, जो हमारी सुनने और हमें बचाने के लिये हमेशा तैयार है।

परन्तु पवित्र बाइबल में एक स्थान पर हम यूँ पढ़ते हैं, कि वे जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते, वे प्रभु के दोबारा आने पर उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। (२ थिस्सलुनीकियों १ : ८, ९)। सो प्रश्न यह है, कि हम किस प्रकार यीशु मसीह के सुसमाचार को मान सकते हैं ? अर्थात् हम किस तरह सुसमाचार का अनुसरण कर सकते हैं ? क्योंकि सुसमाचार यह है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया और गाड़ा गया, और फिर जी उठा, और क्योंकि हम यीशु मसीह की तरह वास्तव में मरकर गाड़े जाने के बाद जीवित नहीं हो सकते, इसलिये ऐसा कोई मार्ग अवश्य है जिसके द्वारा हम मसीह के सुसमाचार को मानकर उद्धार पा लें। सो आईये, देखें :

प्रेरित पौलुस, रोम में मसीह की कलीसिया को लिखकर एक जगह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३, ४)। सो यहाँ

हम क्या देखते हैं ? बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि जब हम यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं तो हम उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं, अर्थात् हम उसकी मृत्यु की समानता में हो जाते हैं, और उस बपतिस्मे के द्वारा हम गाड़े जाते हैं, अर्थात् हम उसके गाड़े जाने की समानता में हो जाते हैं, और फिर बपतिस्मे के जल में से बाहर आकर हम उसके जी उठने की समानता में हो जाते हैं। आगे वह उनसे फिर कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो : और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है ? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों ६ : १६—१८)।

सो, अब हम यहां क्या देखते हैं ? यह, कि वे पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास बन गए। परन्तु कब ? जब वे उस उपदेश के माननेवाले हो गए जिसके साँचे में वे ढाले गए थे। सो उपदेश क्या था ? अर्थात् यह, कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, गाड़ा गया, और फिर जी उठा। सो अब इस उपदेश के सांचे में वे कैसे ढाले गए ? ठीक उसी प्रकार, जैसे कि अभी हमने देखा, अर्थात् बपतिस्मा लेकर। हम सब जानते हैं, कि जो वस्तु एक सांचे में ढलकर बनती है वह स्वयं वास्तविक नहीं होती, परन्तु उस वास्तविक वस्तु का प्रतिरूप होती है जो सब से पहिले बन चुकी है। सो जबकि हम सुसमाचार, अर्थात् उपदेश के सांचे में ढाले जाकर पाप से छूटकर धार्मिकता में प्रवेश करते हैं, तो अवश्य है कि वह सांचा उस सुसमाचार अर्थात् उपदेश के समान हो जो सबसे पहिले दिया गया था, अर्थात् वह यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और उसके जी उठने की समानता

को प्रगट करे। और जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो ठीक यही होता है। अर्थात् जब हम यीशु मसीह में विश्वास लाकर और अपने पापों से पश्चात्ताप करके बपतिस्मे के जल के भीतर गाड़े जाते हैं तो हम प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और उसके कब्र में गाड़े जाने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं, और फिर जब हम बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर आते हैं तो इस प्रकार हम प्रभु यीशु के कब्र में से जी उठने की समानता में उसके साथ एक हो जाते हैं। और इस प्रकार यीशु मसीह के सुसमाचार को मानकर हम पाप से छुटकारा प्राप्त करके धार्मिकता में प्रवेश करते हैं।

मसीह के सुसमाचार को मानने की आवश्यकता और महत्व को हम इस बात में भी देखते हैं, कि अपनी मृत्यु और जी उठने के बाद जब यीशु, स्वर्ग में उठा लिये जाने से पहिले, अपने चेलों से अन्तिम बार मिला, तो उसने उन्हें यह आदेश दिया, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)।

परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपकी अगुवाई करे!

—:o:—

मसीह की कलीसिया

मित्रो :

रेडियो श्रीलंका से यह कार्यक्रम जो आप सुनते हैं, यह आपके पास मसीह की कलीसिया के द्वारा पहुंचाया जाता है। मसीह की कलीसिया प्रभु यीशु मसीह के उन अनुयायियों की एक विशाल मंडली है, जो संसार भर में तित्तर-बित्तर होकर रहते हैं। कलीसिया शब्द वास्तव में यूनानी भाषा के एक्कलीसिया से लिया गया है और जिसका अर्थ है, "बुलाए हुए लोगों का एक झुण्ड" या "एक मण्डली"।

जब प्रभु यीशु स्वयं इस पृथ्वी पर प्रचार किया करता था, तो उसने यह कहकर लोगों को अपने पास आने की दावत दी, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती ११ : २८—३०)।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के वचन को सुनकर उस पर विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो वह हमें स्वयं अपनी कलीसिया अर्थात मन्डली में मिला लेता है। इस बात का एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण हमें बाइबल में एक जगह यूं मिलता है, कि जब प्रेरित पतरस ने लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को यीशु का सुसमाचार सुनाया, तो लिखा है, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे

पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाईयो, हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्रआत्मा का दान पाओगे··सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार लोगों के लगभग उनमें मिल गए।" और फिर, उन लोगों के बारे में आगे लिखा है, कि वे "परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में (अर्थात् कलीसिया में) मिला देता था।" (प्रेरितों २ : ३७, ३८, ४१, ४७)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि मसीह की कलीसिया में हम कोई कागज़ या फ़ॉर्म भरकर शामिल नहीं होते, न ही इसके सदस्य बनने के लिये हमें किसी के वोट की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि मसीह की कलीसिया में हम किसी भी मनुष्य की इच्छा या आज्ञा से सदस्य नहीं बनते, परन्तु जैसा कि अभी हम ने प्रभु के वचन में-से देखा, कि जो लोग प्रभु यीशु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर उद्धार पाते हैं, प्रभु उन को स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेता है।

मसीह की कलीसिया को बाइबल में कई जगह मसीह की देह भी कहा गया है। (इफिसियों १:२२-२३; कुलुस्सियों १:१८, २४)। इसका अर्थ यह है, कि मसीह इस देह का सिर है, अर्थात् इसका प्रधान या संचालक है, और कलीसिया का प्रत्येक सदस्य उस के आधीन रहकर, देह के विभिन्न अंगो के रुप में देह की उन्नति के लिये काम करता है। एक जगह इस विषय में यीशु का एक प्रेरित यूं कहता है, "क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये

बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।" (१ कुरिन्थियों १२: १२, १३, २७) ।

और क्योंकि मसीह की केवल एक ही देह है, इसलिये उसकी केवल एक ही कलीसिया है। उस कलीसिया की बहुतेरी मन्डलियों को एक साथ मिलाकर उन्हें बाइबल में मसीह की कलीसियाएं कहा गया है। (रोमियों १६:१६)। अर्थात्, मसीह की मन्डलियाँ। परन्तु बाइबल में कहीं पर भी मसीह की कलीसिया को कभी भी इस प्रकार के नामों से नहीं पुकारा गया जैसे कि आज बहुतेरी आधूनिक कलीसियाओं को पुकारा जाता है। पवित्र बाइबल में हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में एक जगह कहा, कि मैं **अपनी कलीसिया** बनाऊँगा। (मत्ती १६ : १८) और इसी प्रकार उसने बनाई भी। यदि आपका घर आपके नाम से कहलाता है, और मेरा घर मेरे नाम से कहलाता है, तो क्यों नहीं मसीह की कलीसिया मसीह के नाम से कहलाए ?

मसीह की कलीसिया प्रभु यीशु के सकरे मार्ग पर चलने के आदेश अनुसार, केवल बाइबल के अनुसार ही चलती है। अर्थात् मसीह की कलीसिया किसी भी ऐसी पुस्तक को जो मनुष्य ने लिखी हैं, जैसे कि इन्तखाबी-सबक, दुआ-ए-आम, कैटेकिज़्म, मैनुअल इत्यादि को बिल्कुल नहीं मानती। कोई भी तालीम, चाहे वह मनुष्य के बनाए हुए त्योहार हों या शिक्षाएँ हों, यदि उनका वर्णन हमें परमेश्वर के वचन में नहीं मिलता, तो हम उन्हें क़ोई महत्व नहीं देते। यह दर्शाता है कि मसीह की कलीसिया परमेश्वर और उसके वचन को कितना अधिक महत्व देती है।

मसीह की कलीसिया के पास आज सबसे बड़ा जो काम है वह यह है कि किस प्रकार पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के पास यीशु का सुसमाचार पहुंचाया जाए। क्योंकि हमारा यह विश्वास है कि मसीह का सुसमाचार

परमेश्वर की वह सामर्थ है, जिस पर विश्वास लाकर और जिसे मानकर प्रत्येक मनुष्य अनन्त विनाश के दण्ड से बचकर अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है। और यही कारण है कि हम रेडियो के द्वारा, पुस्तकों के द्वारा, और व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने में प्रयत्नशील हैं। हम लोगों की आत्माओं से प्रेम करते हैं; हम प्रत्येक आत्मा के महत्व को समझते हैं; हम जानते हैं कि मसीह यीशु ने हम में से हर एक की आत्मा को बचाने के लिये अपनी जान दी। और उसने हमें यह आज्ञा दी है कि "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" और, "सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।" (मरकुस १६ : १५; मत्ती २८ : १९—२०)। मसीह की कलीसिया सारे संसार में आज इसी सुसमाचार को फैलाने में प्रयत्नशील है।

मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ, कि आजकल अधिकाँश रूप से कलीसिया अर्थात् चर्च के बारे में लोगों की बड़ी ही गलत धारणाएँ हैं। अकसर लोग सोचते हैं, कि कलीसिया एक ऐसा स्थान या इमारत या घर है जिसमें लोग बैठकर आराधना करते हैं। परन्तु जिस कलीसिया के बारे में हम देख रहे हैं, और जिस कलीसिया के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं, अर्थात् मसीह की कलीसिया, वह कोई निर्जीव वस्तु नहीं है परन्तु वह कलीसिया प्रभु यीशु के वे अनुयायी हैं जो उसकी आज्ञाओं को मानने में और उसकी इच्छा पर चलने में सरगर्म हैं। यह कलीसिया न तो कैथलिक है और न प्रोटेस्टेन्ट है, परन्तु यह केवल मसीह की कलीसिया है।

यह कलीसिया न तो साम्प्रदायिक है और न यह बहु-साम्प्रदायिक है, यह केवल मसीह की कलीसिया है। संसार भर में जितने भी लोगों का

उद्धार हुआ है वे सब के सब इसी कलीसिया के सदस्य हैं, परन्तु जिनका उद्धार नहीं हुआ है वे इस कलीसिया के बाहर हैं। क्योंकि जिनका उद्धार होता है उन्हें प्रभु यीशु प्रतिदिन अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों २:४७)।

और एक बड़ी ही सुन्दर बात यह है, कि मसीह की कलीसिया में कोई भी व्यक्ति, कहीं पर भी, और कभी भी सदस्य बन सकता है, क्योंकि यह मण्डली मसीह की है, इसलिये केवल वह ही लोगों को इसमें मिलाता है। और वह उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाता है जिनका उद्धार होता है। और उद्धार पाने के लिये प्रभु ने कहा है, कि मनुष्य को उसमें विश्वास करना चाहिए; और अपने पापों से पश्चात्ताप करके पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८, ४७; ८ : ३५-३६; २२ : १६)। इसलिए, जब भी कोई मनुष्य यीशु की आज्ञाओं को मानकर उसे अपना उद्धारकर्त्ता बना लेता है, तो यीशु उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता है।

सो मेरी आशा है, कि आप इन बातों के ऊपर अवश्य ही विचार करेंगे। और यदि इन बातों के बारे में आपको और अधिक जानकारी की आवश्यकता हो तो हमारा पता अवश्य नोट कर लें। परमेश्वर आप सब को आशीष दे।

—: ० :—

मसीह का नाम

मित्रो :

जैसा कि आप भली-भांति जानते हैं कि अपने अध्ययन में आजकल हम उन वस्तुओं के बारे में देख रहे हैं जिनका सम्बन्ध यीशु मसीह से है। सो आज हम अपने पाठ में मसीह के नाम के बारे में कुछ आवश्यक बातों पर विचार करेंगे। शायद यह सुनकर आपको कुछ विचित्र सा लगे, और आप कहें, कि नाम के बारे में हम क्या देख सकते हैं, या नाम का क्या महत्व हो सकता है ? किन्तु इससे पहले, कि इस बारे में आप इस तरह की कोई धारणा बनाएँ, मैं आपको यह बता देना उचित समझता हूँ कि नाम का वास्तव में बहुत बड़ा महत्त्व है—और विशेष रूप से यीशु मसीह के नाम का, क्योंकि यह वह नाम है जिसमें हमें उद्धार मिलता है। पवित्र शास्त्र में एक जगह लिखा है : "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक (अर्थात् बाइबल में) लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना २० : ३०, ३१)।

परन्तु, मैं आप से कह रहा था, कि नाम का बहुत बड़ा महत्व है, और यहाँ तक कि मनुष्य के नाम का महत्व भी बहुत सीमा तक प्रभावपूर्ण है। मान लीजिए, यदि मैं आपको पांच सौ रुपये का एक चैक बनाकर दूँ; और आप उसे कैश कराने के लिए बैंक में ले जाएँ; परन्तु यदि उस चैक पर मेरा नाम न लिखा हो तो आप जानते हैं कि आप उसे कभी भी

कैश न करा पाएँगे । सो इससे हम देखते हैं कि नाम वास्तव में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु है ।

किन्तु, जब हम यीशु मसीह के नाम के बारे में विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि उसका नाम अपने अर्थ में और पवित्र शास्त्र के दृष्टिकोण से सभी अन्य नामों में श्रेष्ठ है । पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि इससे भी पहले कि यीशु का जन्म हो, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत के द्वारा प्रगट करके बताया था कि उस बालक का नाम "यीशु" रखा जाएगा । (मत्ती १ : २१) यीशु का अर्थ है, "परमेश्वर उद्धार है ।" इसीलिए, हम देखते हैं कि जब यीशु का जन्म हुआ, तो एक स्वर्गदूत ने चरवाहों की एक टोली पर प्रगट होकर यूँ कहा था, "देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिए होगा । कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है ।" (लूका २ : १०, ११) । "मसीह" का अर्थ है परमेश्वर का अभिषिक्त, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर की ओर से अभिषिक्त, हमारा उद्धारकर्त्ता और हमारा प्रभु है । यही कारण है कि पतरस नाम का यीशु का एक प्रेरित एक जगह यूँ कहता है, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें ।" (प्रेरितों ४ : १२) ।

प्रेरित पौलुस एक जगह लिखकर कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो । जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा । वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया । और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली । इस

कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हरएक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।" (फिलिप्पियों २ : ५—११)।

सो इस तरह हम देखते हैं, कि यीशु मसीह का नाम कोई साधारण नाम नहीं है, क्योंकि यह वह नाम है जो सब नामों में श्रेष्ठ है, जिस नाम में हमें उद्धार मिलता है, और जिसमें हमें अनन्त जीवन मिलता है। पहिली शताब्दि, अर्थात् मसीहीयत के आरम्भ के दिनों में मसीह का नाम उसके अनुयायियों के लिए बड़ा ही पवित्र और महत्वपूर्ण था; वे सब के सब केवल मसीह के नाम से, अर्थात् केवल "मसीही" कहलाते थे। (यशायाह ५६ : ५; ६२ : २; प्रेरितों ११ : २६)। और यहां तक, कि मसीह के नाम के कारण दुःख उठाकर अपने आपको धन्य समझते थे। एक जगह हम पढ़ते हैं, कि जब पतरस और यूहन्ना नाम के यीशु के चेलों को यहूदियों की महासभा में बुलवाकर इसलिए पिटवाया गया क्योंकि वे मसीह के नाम का प्रचार कर रहे थे, तो लिखा है, वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से यह कहते हुए चले गए "कि हम उसके नाम के कारण निरादर होने के योग्य तो ठहरे।" (प्रेरितों ५ : ४१)। फिर पतरस एक जगह यीशु के अन्य अनुयायियों को लिखकर कहता है, कि, "तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुःख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे।"

किन्तु, शायद आप कहें, कि मैं इस विषय पर इतना अधिक बल क्यों दे रहा हूँ? परन्तु वास्तव में मैं पवित्र शास्त्र से बढ़कर इस विषय पर कुछ भी अधिक बल नहीं दे रहा हूँ। मैं केवल वही कह रहा हूँ जो पवित्र

शास्त्र इस विषय पर कहता है; और उसमें लिखा है कि मसीह के नाम के अतिरिक्त "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।"

आज, यद्यपि संसार में धार्मिक दृष्टिकोण से अनेकों लोग भिन्न-भिन्न नामों से कहलाते हैं, परन्तु एक बड़ी ही विचित्र और अप्रशंसनीय बात यह है कि एक बड़ी संख्या में वे लोग भी जो यीशु मसीह के अनुयायी वा चेले होने का दावा करते हैं वे भी आज इस प्रकार के नामों से कहलाते हैं जिनका मसीह के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु प्रश्न यह है, कि मसीह के अनुयायी होते हुए भी आप क्यों एक ऐसे नाम से कहलाते हैं जिसका सम्बन्ध न तो मसीह से कुछ है, और न जिसके बारे में हमें बाइबल में कुछ मिलता है? क्यों आप एक ऐसी कलीसिया में हैं जो मसीह का नाम तक भी अपने ऊपर नहीं रखती? क्या यह उचित है? क्या यह स्वाभाविक है? क्या आरम्भ में मसीह के सारे अनुयायी "मसीही" नहीं कहलाते थे? और क्या उसकी सारी कलीसियाएँ "मसीह की कलीसियाएँ" नहीं कहलाती थीं? (प्रेरितों ११ : २६; रोमियों १६ : १६)। तो फिर आप आज क्यों एक नए नाम से कहलाते हैं, और किसके अधिकार से कहलाते हैं? जबकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि और अन्य कोई नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

वास्तव में मसीही धर्म के उदय होने के पश्चात् दो सौ वर्ष तक यीशु मसीह के अनुयायियों और उसकी मण्डलियों में इस प्रकार के किसी भी अन्य नाम का प्रवेश तक न हुआ था, अर्थात् जैसा कि अभी हमने देखा, कि वे सब "मसीही" और उनकी मण्डलियां "मसीह की कलीसियाएँ" कहलाती थीं। परन्तु पवित्र शास्त्र में लिखी इस चेतावनी के अनुसार कि "ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश

न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएँगे।" (२ तीमुथियुस ४ : ३, ४)। बाद में लोग न केवल मसीह की स्पष्ट शिक्षाओं में ही परिवर्तन लाने लगे, परन्तु उसके नाम के अतिरिक्त वे स्वयं अपने अगुओं और विभिन्न शिक्षाओं आदि के नाम से कहलाने लगे। और आज तो हम जानते ही हैं कि लोग बड़ा घमण्ड अनुभव करते हैं जब वे बताते हैं, कि मैं उस कलीसिया का सदस्य हूँ या उस चर्च का मेम्बर हूँ! परन्तु मैं आपको फिर याद दिलाना चाहता हूँ कि पवित्र शास्त्र में लिखा है, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४ : १२)।

इसलिए चाहिए, कि यदि कोई मनुष्य उद्धार पाना चाहता है तो वह परमेश्वर के पुत्र मसीह के नाम में विश्वास करे, (यूहन्ना २० : ३०, ३१) और अपने पापों की क्षमा के लिए उसके नाम से बपतिस्मा ले, (प्रेरितों २ : ३८), और वचन से या काम से जो कुछ भी करे वह सब प्रभु यीशु मसीह के नाम से करे। (कुलुस्सियों ३ : १७)।

उसी के नाम की महिमा युगानुयुग तक होती रहे। आमीन।

—: ० :—

मसीह का बपतिस्मा

मित्रो :

मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने हमें यह अवसर दिया है ताकि इस समय हम अपना ध्यान उसके वचन पर लगाएँ। मरकुस नाम का पवित्र बाइबल की एक पुस्तक का लेखक एक जगह हमें बताता है, कि एक बार जब यीशु किसी स्थान पर जा रहा था तो लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, "और एक स्त्री जिसको बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, और जिसने बहुत वैद्यों से बड़ा दुःख उठाया था और अपना सब माल व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी, यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया। क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी तो चंगी हो जाऊँगी। और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उसने अपनी देह मे जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई। यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरा वस्त्र किसने छुआ ? उसके चेलों ने उससे कहा; तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है, कि किसने मुझे छुआ ? तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की। तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच-सच कह दिया। उसने उस से

कहा; पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है : कुशल से जा और अपनी इस बीमारी से बची रह।" (मरकुस ५ : २५—३४)।

यहां, इस वर्णन में, हम देखते हैं, कि उस स्त्री का विश्वास बड़ा ही महान था। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि उसने यीशु के सामर्थपूर्ण कामों के बारे में बहुत कुछ सुना था, और जब उसे यह पता चला, कि वही अद्भुत यीशु उसके गांव के पास से निकलकर जानेवाला है, तो उसने अपने में जान लिया कि वह आज ही चंगी हो जाएगी, और अपने दृढ़ विश्वास को प्रगट करने के लिए वह भीड़ में से गिरते-पड़ते होते हुए यीशु के इतने समीप पहुँच गई कि उसने उसके वस्त्र को छू लिया, और जैसा कि उसका विश्वास था, कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी तो चंगी हो जाऊँगी, सो वह तत्काल चंगी हो गई। परन्तु, प्रभु यीशु ने उसी क्षण यह जानकर कि किसी ने बड़े ही विश्वास से मुझे छुआ है कहा कि मुझे किसी ने छुआ है, क्योंकि मुझ में से सामर्थ निकली है। यहां मैं चाहता हूँ, कि आप इस बात पर ध्यान दें कि यद्यपि उस स्त्री ने यीशु के वस्त्र को छुआ था, किन्तु तौभी उसने कहा कि सामर्थ मुझ में से निकली है, अर्थात् चंगाई पाने के लिए उस स्त्री को यीशु की देह को छूना आवश्यक न था, परन्तु यीशु की वस्तुएँ भी सामर्थपूर्ण हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह वस्त्र स्वयं बिल्कुल साधारण और सामर्थ रहित था; वह वस्त्र किसी भी अन्य व्यक्ति के वस्त्र से बढ़कर कुछ भी विशेष न था, परन्तु क्योंकि वह वस्त्र यीशु का वस्त्र था इसलिये उसे छू लेने से यीशु में से वह अद्भुत सामर्थ निकली जिससे वह स्त्री एकदम चंगी हो गई। सो हम देखते हैं, कि न केवल यीशु, परन्तु यीशु की वस्तुएँ भी महत्वपूर्ण और सामर्थपूर्ण हैं।

और आज हम यीशु की जिस वस्तु के बारे में विशेष रूप से देखने जा रहे हैं वह है, यीशु का बपतिस्मा, अर्थात् वह बपतिस्मा जिसकी आज्ञा यीशु ने दी। जिस प्रकार अभी उस स्त्री के वर्णन में हमने देखा कि यीशु के वस्त्र के अतिरिक्त अन्य और भी बहुत से वस्त्र

वहां थे, उसी तरह यीशु के बपतिस्मे के अतिरिक्त अन्य और भी बहुत से बपतिस्मों के बारे में आज शिक्षा दी जाती है। और जिस तरह यीशु के वस्त्र के अतिरिक्त अन्य सभी वस्त्र महत्वरहित और सामर्थरहित थे, उसी प्रकार यीशु के बपतिस्मे के अतिरिक्त आज अन्य सभी बपतिस्में व्यर्थ और सामर्थरहित हैं। परन्तु यीशु का बपतिस्मा क्या है ?

सब से पहिले तो हम यह देखते हैं, कि बपतिस्मे के बारे में हम जो कुछ भी जानना चाहते हैं वह हमें केवल बाइबल में ही मिलता है। सो पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि जब यीशु ने क्रूस के ऊपर अपने प्राणों को बलिदान करके परमेश्वर की मनसा के अनुसार हमारे छुटकारे का दाम भर दिया, तो उसके कुछ मित्रों ने उसकी लोथ को क्रूस के ऊपर से उतारकर एक कब्र के भीतर दफ़ना दिया। परन्तु जिस प्रकार यीशु ने अपने जीते जी कहा था, वह तीसरे दिन कब्र में से जी उठा। बाइबल हमें बताती है, कि स्वर्ग में वापस जाने से पूर्व, वह चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहा, और स्वर्ग में उठा लिये जाने से पूर्व उसने अपने चेलों से मिलकर यूं कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र-आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो···" और "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती २८ : १८, १९; मरकुस १६ : १६)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने विश्वास लाने और बपतिस्मा लेने को उद्धार से पहिले रखा है, अर्थात् प्रभु ने कहा कि उद्धार केवल उसी का होगा जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा। इसी के साथ हम यह भी देखते हैं, कि यीशु ने कहा कि बपतिस्मा

पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से लिया जाना चाहिए।

परन्तु, अब प्रश्न यह है, कि बपतिस्मा किस तरह से लिया जाना चाहिए ? सबसे पहले तो इस विषय में मैं आपको यह बता दूं, जैसा कि कदाचित् आप जानते ही हैं, कि "बपतिस्मा" शब्द हमारी हिन्दी या उर्दू भाषा का शब्द नहीं है, परन्तु यह शब्द यूनानी भाषा के बैप्टीज़्डो शब्द से लिया गया है। और क्योंकि प्रभु यीशु स्वयं यूनानी भाषा बोला करता था, इसलिये उसने बैप्टीज़्डो शब्द का उपयोग किया, जिसको हम हिन्दी में बपतिस्मा कहते हैं। अब, यूनानी भाषा में बैपटीज़्डो शब्द का अर्थ है : गाड़ा जाना, या दफ़न होना, या डूबना। सो इसलिये जब प्रभु यीशु ने कहा, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, तो उसके कहने का अभिप्राय यह था, कि जो मनुष्य मुझ पर यह विश्वास करेगा, कि यीशु मेरे पापों के कारण मारा गया, और अपने पुराने मनुष्यत्व को जल के भीतर बपतिस्मे के द्वारा गाड़ देगा या दफ़ना देगा तो इस प्रकार वह मनुष्य नया जन्म प्राप्त करके उद्धार पाएगा। इसीलिये एक अन्य स्थान पर हम यूं देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने कहा, कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना ३ : ५)।

प्रेरित पौलुस, बाइबल में, अपनी एक पत्री में लिखकर कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे।" (रोमियों ६ : ३-५)।

यहां तर्क यह है, कि जिस प्रकार प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के

लिए मारा गया और फिर गाड़ा गया और कब्र में से जी उठा, उसी प्रकार हम भी बपतिस्मा लेकर यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने की समानता में एक हो जाते हैं। अर्थात, जब मनुष्य बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़ा जाता है और उसमें से निकलकर बाहर आता है, तो यह कार्य प्रभु यीशु की मृत्यु और उसके गाड़े जाने और उसके जी उठने का प्रतिरूप ठहरता है। इसीलिये एक और जगह बाइबल में हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस कहता है कि, "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २७)। अर्थात्, बपतिस्मा लेकर हम मसीह में एक, और उसके भीतर हो जाते हैं, और इस प्रकार हमारा उद्धार होता है।

आपको याद होगा, कि अभी कुछ ही देर पहिले हमने एक स्त्री के बारे में देखा था, और हमने देखा था कि उसे चंगाई केवल तभी मिली जब उसने यीशु के वस्त्र को छुआ। सो यदि आज आप उद्धार पाना चाहते हैं तो आवश्यक है कि आप यीशु में विश्वास लाएँ और उसकी आज्ञा का पालन करें, क्योंकि उसने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" और, एक दूसरी आवश्यक बात जो हम उस स्त्री के वर्णन से सीखते हैं वह यह है, कि यदि वह स्त्री किसी अन्य मनुष्य के वस्त्र को यीशु का वस्त्र जानकर छू लेती तो हम जानते हैं कि वह कदापि चंगी न होती। इसी तरह यदि आपने कदाचित् बपतिस्मा तो लिया हो, किन्तु यदि वह बपतिस्मा यीशु का बपतिस्मा नहीं है, अर्थात् जिस प्रकार अभी हमने देखा, तो वह बपतिस्मा व्यर्थ है।

सो मेरी आशा है, कि इस विषय पर जो कुछ भी अभी हमने देखा उस सब पर आप पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। और यदि इस बारे में आप कुछ और जानना चाहते हैं, तो अपने प्रश्नों को लिखकर हमारे पते पर भेज दीजिए।

प्रभु आपको आशीष दे।

—:०:—

मसीह के विभिन्न मूल्याँकन

मित्रो :

हमेशा की तरह आज भी इस सुन्दर अवसर को पाकर मैं सचमुच में बड़ा ही प्रसन्न हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि यद्यपि अधिकांश लोग हम में से व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से परिचित नहीं हैं, किन्तु तौभी "सत्य सुसमाचार" के इस कार्यक्रम के द्वारा हम सब मिलकर अपना ध्यान एक ही बात के ऊपर लगाते हैं। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है, कि वे सभी लोग जो इस कार्यक्रम को सुनते हैं वास्तव में इसके महत्व तथा उद्देश्य को समझते हैं। क्योंकि अकसर हमारे पास इस प्रकार के पत्र आते हैं जिनमें विभिन्न लोग हम से आग्रह करके कहते हैं कि हम उनकी कहीं नौकरी लगवा दें, या उनका अथवा उनके किसी सम्बन्धी का किसी उचित स्थान पर विवाह करवा दें, या उनके व्योपार इत्यादि की उन्नति के लिए उन्हें कोई उचित सलाह दें। परन्तु इस प्रकार के लोग सुसमाचार प्रचार करने के हमारे काम के विशेष उद्देश्य को वास्तव में ठीक ढंग से नहीं समझते। प्रभु यीशु ने कहा, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" (यूहन्ना ६ : २७)। संसार में लगभग सभी मनुष्य जगत की नाशमान वस्तुओं को प्राप्त करने में लौलीन हैं। किन्तु हमारे जीवन का केवल एक यही उद्देश्य है कि हम संसार में प्रत्येक मनुष्य तक उद्धार का यह सुसमाचार पहुँचाएँ कि प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया, और गाड़ा गया और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा, और एक दिन वह अपने उन सब लोगों को लेने के लिये वापस आ रहा है,

जो उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर क्रूस पर हुए उसके बलिदान के कारण धर्मी ठहरते हैं।

किन्तु, न केवल लोग प्रभु यीशु के सुसमाचार को ही गलत ढंग से समझते हैं, परन्तु अनेकों लोग स्वयं प्रभु यीशु मसीह के बारे में भी अनुचित विचार वा धारणाएँ रखते हैं। एक जगह हम पढ़ते हैं, कि एक बार जब यीशु अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, तो लिखा है, "उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कितने एलिय्याह और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। उसने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो ? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवेत परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर (अर्थात् तेरे इस दृढ़ अंगीकार) पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा : और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती १६ : १४-१८)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि यीशु के प्रचार को सुनकर और उसके कामों को देखकर अनेकों लोगों ने उसके बारे में अपने मनों में अपनी-अपनी समझ के अनुसार विचार बना रखे थे। और जबकि कुछ लोग उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते थे, क्योंकि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की ही तरह लोगों को बपतिस्मा देता था, और उन्हें मन फिराने का उपदेश देता था और बड़ी ही सच्चाई वा खराई के साथ प्रचार किया करता था; किन्तु दूसरी ओर कुछ लोगों का विचार था कि वह एलिय्याह है। एलिय्याह के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि वह बड़ा ही निडर होकर लोगों के अविश्वास और उनके अनुचित कामों की उनके मुँह पर कड़ी निन्दा किया करता था। और क्योंकि

ठीक यही बात प्रभु यीशु के भीतर भी थी, तो बहुतेरे लोग उसके बारे में कहने लगे थे कि एलिय्याह फिर से जगत में आ गया है। और इसी प्रकार, क्योंकि यीशु के भीतर कुछ ऐसी विशेष बातें थीं जो यिर्मयाह और अन्य भविष्यद्वक्ताओं से बहुत कुछ मिलती जुलती थीं, सो लोगों का विचार था कि वह कदाचित उन्हीं लोगों में से कोई एक है।

किन्तु वास्तव में, न तो यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला था, न वह एलिय्याह था और न यिर्मयाह था और न ही वह कोई एक भविष्यद्वक्ता था, परन्तु जैसा कि परमेश्वर से प्रेरणा पाकर पतरस ने उत्तर दिया, यीशु वास्तव में जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

इसमें कोई संदेह नहीं, कि प्रभु यीशु के बारे में आज भी लोगों के भिन्न-भिन्न विचार हैं। कुछ लोग उसे एक झूठा और धोखेबाज़ व्यक्ति समझते हैं, तो कुछ अन्य लोगों का विचार है कि वह एक अच्छा व्यक्ति था। परन्तु सच्चाई यह है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, और है। क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु से पूर्व प्रभु यीशु ने कहा था, कि जिस तरह मूसा ने पूर्व युग में सांप को जंगल में ऊँचे पर चढ़ाया था, उसी रीति से अवश्य है कि वह भी ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा, और जो कोई विश्वास करेगा उसमें अनन्त जीवन पाएगा। उसने कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १४-१६)।

यीशु परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि उसने किसी मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु स्वयं परमेश्वर की सामर्थ से पृथ्वी पर जन्म लिया था। पवित्र शास्त्र कहता है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था······और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की

महिमा।" (यूहन्ना १ : १, १४)। और यीशु की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के बाद, पवित्र वचन कहता है, कि वह "पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" (रोमियों १ : ४)। सो यदि यीशु अपनी मृत्यु के बाद फिर से न जी उठता तो वह कदापि परमेश्वर का पुत्र सिद्ध न होता। इसके अतिरिक्त, उसका जीवन, उसके काम वा शिक्षाएँ भी यह प्रमाणित करती हैं कि वह कोई मनुष्य मात्र ही न था, परन्तु वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था।

दूसरी ओर, हम यह भी देखते हैं, कि वह हमारा उद्धारकर्त्ता है। क्योंकि उसने हमें बचाने के लिए अपनी जान दी। परमेश्वर की इच्छा से उसका पुत्र क्रूस के ऊपर इसीलिये चढ़ाया गया ताकि वह हमारे पापों के लिये प्रायश्चित ठहरे। इसी कारण, पवित्र शास्त्र एक जगह कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। सो इसलिये, क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे लिये पाप ठहराया; क्योंकि यीशु ने हमारे अधर्म वा अपराध के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया, आज वह हमारा उद्धारकर्त्ता है।

और जब हम यीशु में विश्वास लाकर तथा उसकी आज्ञाओं को मानकर, अर्थात अपना मन पाप से फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता बना लेते हैं, तो हम एक ऐसी दौड़ में शामिल हो जाते हैं जो स्वभाव में आत्मिक है और जिसका ईनाम अनन्त जीवन है। परन्तु संसार में रहकर इस पवित्र दौड़ को सफलतापूर्वक पूरा करना हम में से प्रत्येक के लिये बड़ा ही कठिन काम है। किन्तु क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, कि विश्वास की इस दौड़ में यीशु हमारा कर्त्ता, अर्थात हमारा कप्तान है, इसलिये यदि हम उसकी अगुवाई में, अपना ध्यान उस पर रखकर, इस दौड़

को धैर्य से दौड़ते रहें, तो हम जानते है कि हम निश्चय ही सफल होंगे। पवित्र वचन कहता है: "इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।" (इब्रानियों १२ : १-३)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि यीशु न तो मात्र एक शिक्षक या उपदेशक था, न वह कोई भविष्यद्वक्ता या अवतार था। परन्तु वास्तव में वह परमेश्वर का पुत्र था। और वह इस जगत में इसलिये आया ताकि वह हमारा उद्धार करे। और हमारा उद्धार करने के लिये उसने अपने आपको बलिदान कर दिया, सो वह हमारे लिये प्रायश्चित ठहरा। वह हमारा उद्धारकर्त्ता और हमारे विश्वास का कर्त्ता अर्थात कप्तान है। यद्यपि विश्वास की इस दौड़ में केवल अपने प्रयत्न से दौड़कर हम कभी भी अनन्त जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते, किन्तु क्योंकि प्रभु यीशु हमारा सहायक और अगुवा है इसलिये हम अवश्य ही उसे प्राप्त करेंगे।

सो मेरा विश्वास है, कि ये बातें यीशु मसीह को समझने में और अपने जीवन में उसकी आवश्यकता के महत्व को देखने में आपकी सहायता करेंगी।

प्रभु आपको आशीष दे।

—: ० :—

मसीह के दावे

मित्रो :

संसार में यदि किसी भी व्यक्ति के बारे में कभी भी सबसे अधिक लिखा वा कहा गया है, तो वह व्यक्ति है यीशु मसीह । शताब्दियों से यीशु लोगों के बीच में बड़े ही तर्क का विषय रहा है । और इसका मुख्य कारण यीशु के वे दावे हैं जो उसने अपने बारे में किए, जिनके कारण उसे अपने विरोध में लोगों का बड़ा वाद-विवाद सहना पड़ा और फलस्वरूप उसे अपने प्राणों को भी देना पड़ा । परन्तु इससे पहिले कि हम यीशु के उन दावों के ऊपर आज विचार करें, यहाँ यह कह देना बड़ा ही उचित होगा, कि यदि कोई व्यक्ति अपने बारे में कोई विचित्र स्वभाव का दावा करता है तो उस व्यक्ति के बारे में इन तीनों बातों में से कोई एक बात अवश्य ही सच होती है, अर्थात, या तो वह व्यक्ति कोई सिरफिरा या पागल है, या फिर वह एक झूठा व्यक्ति है, और या फिर वह वास्तव में वही है जो वह होने का दावा करता है ।

इन तीनों बातों को दृष्टिकोण में रखकर जब हम यीशु मसीह के दावों के बारे में विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि यीशु के पास एक बड़ा ही शक्तिशाली दिमाग था । क्योंकि यदि ऐसा न होता तो वह किस प्रकार लोगों को इतनी अद्भुत वा प्रभावपूर्ण शिक्षाएँ देता जिनका स्थान मनुष्य के जीवन में बड़ा ही प्रेरणादायक और आवश्यक रहा है ? और वास्तव में, बात तो यह है, कि पृथ्वी पर आज तक कोई भी ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ जिसकी बातों की तुलना यीशु की शिक्षाओं वा उपदेशों और सिद्धांतों से की जाए । सो इसे

ध्यान में रखकर, हम जानते हैं, कि वह कोई पागल व्यक्ति नहीं था, परन्तु वह वास्तव में बड़ा ही बुद्धिमान और ज्ञानी था।

फिर हम देखते हैं, कि अपने दावों के कारण यीशु को बड़े ही निरादर, अत्याचार, और यहाँ तक कि क्रूस की जैसी दुखदायी मृत्यु का भी सामना करना पड़ा। अपने अन्य दावों में यीशु का एक मुख्य दावा यह था, "कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।" यीशु यहूदी लोगों के बीच में रहता था, और उनके निकट यीशु का यह दावा घृणाजनक और परमेश्वर के प्रति अपमान-जनक था। सो उन्होंने यीशु को पकड़ा और उसे महायाजक के पास ले गए और उस पर यह दोष लगाया, कि इसने अपने आपको परमेश्वर के समान बनाया है। सो हम पढ़ते हैं, कि जब महायाजक ने यीशु से कहा कि "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे।" इस पर यीशु ने उससे कहा, "तू ने आप ही कह दिया।" लिखा है, "तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इसने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है। तुम क्या समझते हो? उन्होंने उत्तर दिया, यह बध होने के योग्य है। तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मारकर कहा, हे मसीह, हमसे भविष्यवाणी करके कह, कि किस ने तुझे मारा।" (मत्ति २६ : ६३-६८)। और इस घटना के कुछ ही घन्टों के बाद, हम पढ़ते हैं कि उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और इस प्रकार उसे मार डाला।

यहां जिस आवश्यक बात पर हमारा ध्यान जाता है, वह यह है, कि यदि कोई मनुष्य झूठ बोलता है तो वह ऐसा किसी प्रकार के लाभ को प्राप्त करने के लिए ही करता है, अर्थात् या तो वह किसी वस्तु को पाने के लिए झूठ बोलता है, और या अपने आप को बचाने के लिये झूठ बोलता है। परन्तु कौन सा ऐसा मनुष्य होगा जो अपने

प्राणों को खो देने के लिए झूठ बोलेगा ? ऐसा मनुष्य कौन होगा जो झूठ बोलकर अपने प्राणों को खो देना उचित समझेगा ? प्रत्येक मनुष्य अपनी जान से प्रेम करता हैं, वह उसे बचाने के लिये सब कुछ कर सकता है; अपने प्राणों को बचाने के लिए वह झूठ बोल सकता है, परन्तु अपने प्राणों को खोने के लिए वह कभी भी झूठ न बोलेगा। सो यदि यीशु का यह दावा झूठा था, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहिले मौत को समाने खड़ा देखकर, वह अपने इस दावे को वापस ले सकता था, उस से मुकर सकता था। परन्तु उसने अपने दावे से इन्कार करने के विपरीत, उसके कारण अपने प्राणों को दे देना अधिक उचित समझा। क्योंकि उसका दावा सच्चा था। और यह बात उस समय वास्तव में प्रमाणित हो गई जब यीशु अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा। यदि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र न होता तो यह कैसे सम्भव हो सकता था ?

परन्तु, फिर हमें यीशु के कुछ अन्य दावों के बारे में भी मिलता है। एक जगह हम पढ़ते हैं, उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। और एक अन्य स्थान पर वह कहता है, "जीवन की रोटी मैं हूं......यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।" (यहून्ना ६ : ४८, ५०, ५१)। फिर एक और जगह उसने कहा, "द्वार मैं हूं : यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा।" (यहून्ना १० : ९)।

यहां जिस एक बड़ी ही विशेष बात को हम देखते हैं वह यह है, कि जबकि समय-समय पर अनेकों लोगों ने संसार में धर्म का प्रचार

किया, किन्तु उन सभों ने किसी दूसरे की ओर ही संकेत किया, जबकि यीशु ने स्वयं को ही मार्ग और सच्चाई वा जीवन इत्यादि कहकर सम्बोधित किया। और यह सच्च है! क्योंकि यदि यीशु परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर हमारे पापों के कारण बलिदान न होता तो हम उद्धार के मार्ग को कदापि न जानते। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि संसार में समय-समय पर अनेकों शिक्षक वा उपदेशक इत्यादि हुए हैं, परन्तु क्या उनमें से किसी ने भी सम्पूर्ण मानवता के लिये, जगत के सारे लोगों के लिए, अपने लोहू की एक बूंद भी बहाई? किन्तु तौभी यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं, कि उसने परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखा। (इब्रानियों २ : ९)। और लिखा है, कि वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया। (१ पतरस २ : २४), और यूं, जो पाप से अज्ञात था, उसी को, अर्थात अपने पुत्र को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। जी नहीं; यीशु केवल किसी एक कबीले या जाति या देश के लोगों के लिये नहीं मरा। उसने अपनी जान केवल पीले या गोरे लोगों के लिए ही नहीं दी। वह क्रूस पर केवल यहूदियों या ईसाईयों के लिये नहीं चढ़ाया गया। किन्तु, लिखा है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यहून्ना ३ : १६)।

सो, क्योंकि यीशु जगत के सारे लोगों के लिये मारा गया; क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार के प्रत्येक मनुष्य के पापों के कारण क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मृत्यु दन्ड दिया—इसलिये निश्चय ही वह हम सबका उद्धारकर्ता है। वह स्वर्ग में प्रवेश करने का हम सबके लिये एक मात्र मार्ग है; वह हमारा सच्चा अगुवा है; उसी के भीतर हमें अनन्त जीवन मिलता है; वह जीवन की वह रोटी है जो हमारी आत्मा को मरने से

बचाती है; और जीवन का केवल वही एक मात्र द्वार है।

पवित्र शास्त्र कहता है : "कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर क महिमा से रहित हैं। परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों ३:२३-२५)। "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों ६ : २३)।

मित्रो, यह सचमुच में बड़े ही आनन्द का सुसमाचार है; और पवित्र बाइबल कहती है, कि प्रत्येक मनुष्य जो यीशु मसीह में विश्वास करता है, और अपने पापों से मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेता है, यीशु उसका उद्धार करता है और उसे अपनी कलीसिया अर्थात् अपनी मन्डली में मिला लेता है। इसी निमंत्रण के साथ हम अपने आज के पाठ को समाप्त करते हैं। और मेरा विश्वास है कि आप इन बातों के ऊपर अवश्य ध्यान देंगे।

परमेश्वर अपने वचन को समझने में आपकी सहायता करे।

—:o:—

मसीह का क्रूस

मित्रो :

यूं तो इस समय ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके ऊपर मेरा ध्यान जाता है, कि मैं उनके बारे में आप को बताऊँ, परन्तु मेरे विचार में सबसे अच्छा और उचित यही होगा कि आज मैं आपको यीशु मसीह के क्रूस के बारे में बताऊँ।

आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व, जब यीशु यरुशलेम में रहकर लोगों को उपदेश देता और उनके बीमारों को चंगा करता था, और जब उसकी आयु लगभग कुल ३३ वर्ष की ही थी, तो एक दिन जब वह एक स्थान पर प्रार्थना कर रहा था, कि एकाएक यहूदियों की एक बड़ी भीड़ ने आकर उसे घेर लिया। तब उन्होंने उसे पकड़ा और काइफा नाम के अपने एक महायाजक के सामने लाकर उसे इस बात के लिये दोषी ठहराया कि इसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र और परमेश्वर के समान बनाया है। परन्तु वे उसे मार डालना चाहते थे। और इस दृष्टिकोण से वे उसे रोमी सरकार के हाकिम पीलातुस के पास ले गए ताकि उसे मृत्यु दण्ड दिलवाएँ। किन्तु पीलातुस ने यीशु की अच्छी तरह जांच करने के बाद यह घोषणा की, कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता और वह उसे छोड़ देना चाहता था। परन्तु यहूदी इस बात का निश्चय कर चुके थे कि वे यीशु को मरवा कर ही रहेंगे।

"और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्ब्ब में लोगों के लिये किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था। सो जब वे इकट्ठे

हुए, तो पीलातुस ने उनसे कहा; तुम किसको चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं ? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है ? क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है…… महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश करवाएँ। हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो कि तुम्हारे लिये छोड़ दूँ ? उन्होंने कहा; बरअब्बा को। पीलातुस ने उनसे पूछा कि फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूँ ? सब ने उससे कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। हाकिम ने कहा; क्यों उसने क्या बुराई की है ? परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।" जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए, और कहा, मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूँ, तुम ही जानो। सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। इस पर उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।" (मत्ती २७ : १५—२६)।

"तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता। वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।" (यूहन्ना १९ : १७—१८)।

क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दण्ड देना उन दिनों रोमी सरकार के नियमानुसार सबसे कड़ा दण्ड था। और वास्तव में यह दण्ड बड़े ही भयंकर रूप का था। क्योंकि इसमें मनुष्य की मृत्यु एकदम नहीं हो जाती थी, परन्तु वह मृत्यु से पूर्व कई घण्टों तक होश में रहकर

अत्यन्त पीड़ा का अनुभव करते हुए धीरे-धीरे अपना दम तोड़ता था। जब किसी मनुष्य को क्रूस के उपर चढ़ाने की सज़ा दी जाती थी, तो सबसे पहले उसे कोड़े से पीटा जाता था। यह कोड़ा चमड़े का बना होता था और उसे और अधिक पीड़ाजनक बनाने के लिए उसमें कुछ और ऐसी वस्तुएँ लगा दी जाती थीं, जैसे हड्डियां इत्यादि, ताकि पीड़ा और अधिक अनुभव की जाए। अनेकों बार इन्हीं कोड़ों की पिटाई से मनुष्य बेहोश हो जाता था। फिर उसके कांधो पर उसके क्रूस को लादकर उसे मजबूर किया जाता था कि वह उसे नगर के बाहर बने खोपड़ी नाम के उस स्थान तक ले चले जहां क्रूस पर चढ़ाकर उसे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। क्रूस लकड़ी के दो लट्ठों को आपस में जोड़कर या बांधकर बनाया जाता था, और यह अंग्रेज़ी के T शब्द की तरह बना होता था। जब दोषी व्यक्ति, सिपाहियों और लोगों की भीड़ के साथ अपने क्रूस को लिये हुए खोपड़ी के उस स्थान पर पहुँचता था, तो सिपाही उसके कपड़े उतारकर उसे क्रूस के ऊपर लिटा देते थे। फिर वे कीलों से उस मनुष्य के हाथों व पैरों को उसी क्रूस के साथ ठोंक देते थे। इसके बाद कुछ जन मिलकर उस क्रूस को खड़ा करके उसके निचले भाग को भूमि में बने गड्ढे में दबा देते थे। और यूँ वह व्यक्ति बिना किसी दया के मरने के लिए छोड़ दिया जाता था। जब वह व्यक्ति मर जाता था तो प्राय: आकाश के पक्षी, चील, कौवे, इत्यादि आकर उसके शरीर को नष्ट कर देते थे। सम्भव है, क्योंकि उस स्थान पर मरे हुए लोगों की अनेकों ख़ोपड़ियां पड़ी रहती थीं, कदाचित् इसीलिए उस स्थान को खोपड़ी की जगह कहा जाता था!

परन्तु, उस दिन वहां तीन व्यक्तियों को क्रूसों पर चढ़ाया गया, एक को इधर और एक को उधर और बीच में यीशु को। यद्यपि हम जानते हैं, जैसा कि हमने देखा था, कि यीशु को उन्होंने क्रूस पर

इसलिए चढ़ाया क्योंकि वे उसे एक धार्मिक अपराधी समझते थे, अर्थात् क्योंकि उसने कहा था, कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ। परन्तु वे दो व्यक्ति, उसके दाहिने और बाएँ, क्रूसों पर क्यों चढ़ाए गए थे ? मत्ती नाम का बाइबल का एक लेखक हमें बताता है, कि वे दोनों डाकू थे। (मत्ती २७ : ३८)। अर्थात्, वे दोनों डाका डालने के अपराध में दोषी ठहराए गए थे। यह बात वास्तव में बड़े ही ध्यान देने योग्य है कि यीशु में कोई अपराध न होते हुए भी वह अपराधियों के संग गिना गया। अर्थात् उसे एक ऐसा दण्ड, हां, क्रूस पर मृत्यु दण्ड मिला, मानो वह एक बहुत बड़ा अपराधी हो ! परन्तु यदि वह परमेश्वर का पुत्र था, शायद आप कहें, तो फिर क्यों नहीं उसने अपने पुत्र को इतने भारी संकट से बचा लिया ?

परन्तु मित्रो, मैं आपको बताना चाहता हूं कि उन दो डाकुओं के बीच में क्रूस पर लटका हुआ वह व्यक्ति यीशु यद्यपि उस दिन मनुष्यों की अदालतों में बे-गुनाह और निर्दोष पाया गया। किन्तु वास्तव में, परमेश्वर की अदालत में वह बहुत पहिले ही से एक अपराधी ठहराया जा चुका था। नहीं, इसलिए नहीं, कि उसमें कोई दोष था, परन्तु वास्तव में पृथ्वी पर केवल वही एक ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने कभी कोई पाप न किया और एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया। किन्तु परमेश्वर ने उसी सिद्ध और निर्दोष यीशु को लेकर एक निष्कलंक मेम्ने के समान उस दिन इसलिए बलिदान करवाया ताकि वह पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के अपराध वा पाप के लिये एक प्रायश्चित ठहरे। "परमेश्वर ने ?" शायद आप कहें, "परन्तु यीशु को तो यहूदियों ने पकड़ा था और रोमी सिपाहियों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया था।" निःसंदेह, यह ठीक है, कि उसे यहूदियों ने डाह से पकड़ा था और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि रोमी सिपाहियों ने उसे क्रूस पर लटकाया था। परन्तु, मित्रो, पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि मनुष्य के उद्धार का यह अनोखा

काम परमेश्वर ने अपने होनहार के ज्ञान के अनुसार इसी अद्भुत रीति से पूरा किया। और सच्चाई तो यह है, कि यीशु के जन्म से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपनी इस अनोखी योजना को भविष्यद्वक्ता यशायाह के द्वारा बड़े ही अद्भुत शब्दों में प्रगट किया था; यशायाह यीशु के विषय में कहता है : "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हरएक ने अपना-अपना मार्ग लिया और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने अपना मुँह न खोला······वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिए बिनती करता है।" (यशायाह ५३ : ४—७, १२)।

यीशु ने हम सब के अपराधों वा पाप का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस के ऊपर अपने प्राणों को बलिदान किया। सो यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, अपने पापों से मुक्ति पाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए, कि हम क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु पर विश्वास करें और अपने पापों से मन फिराएँ, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लें।

प्रभु अपने वचन पर चलने के लिए आपको अशीष दे।

—:०:—

मसीह की महत्वपूर्ण आज्ञा

मित्रो,

मेरा मन सचमुच में इस समय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से परिपूर्ण है। और विशेषकर जबकि मैं इस बात पर विचार करता हूं कि उसने मुझे इतना बड़ा कर्त्तव्य सौंपा है, कि मैं उसके सुसमाचार को इतने बड़े जन समूह को, जिसमें आप सब शामिल हैं, सुनाऊँ तो मैं अपने आपको बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूं। इसमें कोई संदेह नहीं और आप सब लोग भली भांति जानते हैं, कि मैं आपका ध्यान उन विशेष बातों के ऊपर दिलाता हूँ जिनका सम्बन्ध अनन्त जीवन से है, अर्थात आपकी आत्मा के उद्धार से है, और निःसंदेह भविष्य में भी मेरा यही प्रयत्न रहेगा कि मैं उस सुसमाचार को जो हमें मसीह यीशु ने दिया है और जो हम सबके उद्धार का कारण है इसी प्रकार खराई से सुनाता रहूँ।

आज हम विशेष रूप से प्रभु यीशु के उन शब्दों पर विचार करेगें जो उसने स्वर्ग में वापस जाने से पहले और पृथ्वी पर अन्तिम बार कहे थे। यीशु के इन अन्तिम शब्दों को प्रायः "मुख्य आदेश" या "महत्वपूर्ण आज्ञा" कहा जाता है। हम सब भली भाँति जानते हैं, कि किसी भी व्यक्ति के अन्तिम शब्द जो वह हमसे बिछड़ते समय कहता है, हमारे लिए बड़ा ही महत्व रखते हैं। हम अक्सर लोगों को कहते सुनते हैं, कि यह बात, या यह आदेश या आज्ञा हमारे पिता या माता या किसी प्रिय सम्बन्धी ने हमें मरते समय या हमसे बिछड़ते समय हमें दी थी। और वे उन शब्दों को बड़ा ही प्रिय जानते हैं और उन्हें बड़ा ही

महत्वपूर्ण समझकर उन पर अमल करते हैं।

परन्तु जबकि मनुष्यों के अन्तिम शब्दों का इतना अधिक आदर व सम्मान किया जाता है तो परमेश्वर के पुत्र और हमारे प्रभु के अन्तिम शब्दों को, जिसने हम सबको बचाने के लिए अपनी जान दे दी, हमें कितना अधिक और भी बढ़कर महत्वपूर्ण और आवश्यक समझना चाहिए। सो आइये, आज हम पूरी गम्भीरता के साथ यीशु के इन अन्तिम शब्दों के ऊपर विचार करें। ये शब्द यीशु ने उस समय कहे, जब वह अपने कहे अनुसार, अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन जी उठा और फिर चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहने के बाद जब वह स्वर्ग पर वापस जा रहा था। और ऊपर उठाए जाने से पहले उसने अपने चेलों से कहा— "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८:१८-२०)। यीशु के ये अन्तिम शब्द मत्ती नाम के उसके एक चेले ने अपनी पुस्तक में लिखे हैं। और मरकुस यीशु के इस अन्तिम तथा मुख्य आदेश का वर्णन इन शब्दों में करता है "और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६: १५,१६)।

अब, यदि हम यीशु के इस अन्तिम वा महत्वपूर्ण मुख्य आदेश को एक साथ मिलाकर पढ़ें, तो हमें मिलेगा, कि उसने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा कि "तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ"... "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो

विश्वास करे और बपतिस्मा लें उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।"

मित्रो, यीशु की यह आज्ञा न केवल इसी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है क्योंकि ये उसके अन्तिम शब्द हैं परन्तु ये आज्ञा मुख्य और महत्वपूर्ण विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि इसका सम्बन्ध हमारी आत्मा और उद्धार से हैं। सो आईए, अब हम इस मुख्य आज्ञा को कुछ विस्तार से देखें। सबसे पहिले, यीशु ने कहा, कि तुम सारे जगत में जाकर लोगों को चेला बनाओ। 'चेला' शब्द का अर्थ है, एक सीखनेवाला या अनुसरण करनेवाला। किन्तु, लोग किस प्रकार से सीखेंगे यदि उन्हें सिखाया नहीं जायेगा ? सो मरकुस हमें बताता है, कि उसने उनसे कहा, कि तुम जाकर सबको सुसमाचार प्रचार करो। परन्तु सुसमाचार क्या है ? कौन-सा सुसमाचार प्रचार करने की आज्ञा यीशु ने दी ? पवित्र बाइबल के अनुसार सुसमाचार केवल एक ही है। और वह एकमात्र सुसमाचार यह है, कि पवित्र शास्त्र के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर, गया, और गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर जी उठा (१ कुरिन्थियों १ ५: १-४) परन्तु, कदाचित आप जानना चाहें की यीशु हमारे पापों के लिए क्योंकर मर गया ?

मित्रो, हम बड़ी अच्छी तरह से जानते हैं कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति पापी और अधर्मी है। किन्तु तौभी हम में से हर एक को उद्धार की आवश्यकता है, अर्थात हमें पाप रहित और धर्मी बनने की आवश्यकता है, क्योंकि हम में से हर एक को परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देना है। (रोमियों १४ : १२) और जिस प्रकार से जीवन और मृत्यु एक सच्चाई है वैसे ही स्वर्ग और नर्क भी एक सच्चाई है। पवित्र शास्त्र कहता है, कि केवल धर्मी ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और सारे अधर्मी नर्क में अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। (मत्ती २५:४६)। कुछ लोग सोचते हैं, कि यह बात बिल्कुल असम्भव है। उनके विचारानुसार, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है

इसलिये वह कभी भी किसी भी व्यक्ति को नरक में दण्ड न देगा। किन्तु वे लोग भूल जाते हैं कि परमेश्वर केवल प्रेम ही नहीं है परन्तु वह एक सच्चा न्यायी भी है। और यदि वह दुष्ट और धर्मी को एक सा ही फल देगा तो फिर उसे न्यायी कौन कहेगा? कौन उससे डरेगा और उसकी मानेगा? परन्तु सच्चाई यह है, कि परमेश्वर प्रेम भी है और न्यायी भी है।

सो यद्यपि मनुष्य पापी वा अधर्मी तो है, परन्तु क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है इस कारण वह उसे बचाना चाहता है, उसका उद्धार करना चहाता है और उसे धर्मी बनाकर स्वर्ग में प्रवेश पाने के योग्य बनाना चाहता है। और इस बड़े काम को करने के लिए परमेश्वर स्वयं प्रभु यीशु मसीह में होकर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में आ गया। उसने उन्हें उपदेश दिये और उनके सामने बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम किए, और फिर उसने परमेश्वर के होनहार के ज्ञान और उसकी मनसा के अनुसार स्वयं को अपने शत्रुओं के हवाले कर दिया, जो उससे डाह करते थे। और उन्होंने उसे लेकर एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर उसे मार डाला। जब वह मर गया तो उसके कुछ मित्रों ने उसकी लोथ को लेकर अपनी रीति के अनुसार एक कब्र में गाड़ दिया। परन्तु क्योंकि यीशु एक मनुष्य मात्र ही न था, किन्तु वह परमेश्वर का पुत्र था, इसलिए वह तीसरे दिन परमेश्वर की सामर्थ्य से फिर जी उठा। और इस प्रकार परमेश्वर ने क्रूस के ऊपर हमारे उद्धार के काम को पूरा किया, अर्थात् हमारे पापों के कारण, हमें नरक में अनन्त दण्ड भोगने से बचाने के लिए परमेश्वर ने हमारे स्थान पर हमारे पापों के कारण अपने पुत्र यीशु को क्रूस के ऊपर दण्ड दिलवाया, ताकि हम उसके द्वारा अधर्म से बचकर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएं। पवित्र शास्त्र कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। सो इसलिए, यह बात, कि यीशु

मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया और तीसरे दिन मुर्दों में से फिर जी उठा, हम सब के लिए एक सुसमाचार है।

परन्तु, यीशु ने कहा, कि जो इस सुसमाचार पर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, और उसने कहा कि बपतिस्मा पिता अर्थात् परमेश्वर और पुत्र अर्थात् यीशु और पवित्र आत्मा के नाम से लेना चाहिए। और इस बात पर भी ध्यान दें कि उसने कहा, कि उद्धार केवल उसी का होगा जो विश्वास करके बपतिस्मा लेगा, अर्थात् बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिए प्रभु की एक आज्ञा व शर्त है। सो शायद आप पूछें कि बपतिस्मा कैसे लिया जाता है? बाइबल के अनुसार, बपतिस्मा लेने का अर्थ यह है, कि जब मनुष्य यीशु के सुसमाचार में विश्वास लाकर, पाप से अपना मन फिराता है तो उसे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से जल के भीतर दफ़न होकर उसमें से बाहर निकलना चाहिए (रोमियों ६ : ३-५; प्रेरितों ८ : ३५-३९), अर्थात बपतिस्मा इस बात को दर्शाता है, इस बात का प्रतीक है, कि जिस प्रकार यीशु मेरे पापों के कारण मर गया सो मैं अपने पापों के लिए मर गया, और मरने के बाद जैसे वह कब्र में गाड़ा गया वैसे ही मैं भी बपतिस्मे के द्वारा जल-रूपी कब्र के भीतर गाड़ा गया, अर्थात मेरा पुराना मनुष्यत्व मर गया और दफ़न हो गया, और जिस तरह यीशु जी उठा और कब्र से बाहर निकल आया वैसे ही मैं भी बपतिस्मे की जल-रूपी कब्र से बाहर निकलकर एक नए जीवन की चाल चलने के लिए जी उठा। सो बपतिस्मा, वास्तव में प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रतिरुप है। इसीलिए हम देखते हैं, कि प्रभु ने कहा, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।

और, फिर प्रभु ने अपनी इस महत्वपूर्ण आज्ञा के अन्त में कहा, कि बपतिस्मा देने के बाद उन्हें वह सब बातें मानना सिखाओ जो मैंने

तुम्हें आज्ञा दी है। अर्थात, विश्वास तथा भक्ति-पूर्ण जीवन व्यतीत करना, प्रार्थना और प्रभु के कामों में लौलीन रहना, उसके सुसमाचार को अन्य लोगों को सुनाना और उन्हें बपतिस्मा देना और प्रभु की आज्ञाओं को उन्हें भी मानना सिखाना। (प्रेरितों २ : ४२)।

सो क्या आप प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं ? क्या आप उसके सुसमाचार में विश्वास करते हैं ? यदि हां, तो आपको चाहिए कि आप उसके सुसमाचार को मानें।

परमेश्वर आपकी आत्मा के महत्व और यीशु के सुसमाचार को समझने के लिए आपको बुद्धि दे। उसी की आशीष हम सब पर बनी रहे।

—: ० :—

मसीह का अंगीकार

मित्रो,

प्रभु यीशु ने अपने प्रचार-काल में जो कुछ भी उपदेश दिया और कहा उसमें सबसे अधिक स्पष्ट और चुनौतिपूर्ण बात उसने यह कही, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना, पर उसी से डरो; जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकती ? तौ भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिए डरो नहीं तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। जो कोई मनुष्य के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा। यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ, मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। मैं आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होगें। जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है। वह मेरे योग्य नहीं, और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं, और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।" (मत्ती १०:१८-३९)।

बहुतेरे लोगों को प्रभु यीशु के ये शब्द बड़े ही विचित्र तथा अप्रिय लगते हैं। वे सोचते हैं, कि यीशु, जिसने शान्ति तथा मेल मिलाप का संदेश दिया, जिसने आपस में एक दूसरे से और यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखने का उपदेश दिया, उसने इस प्रकार की बात क्यों कही ? क्यों उसने कहा, कि मैं लड़ाई करवाने आया हूं, फूट डलवाने आया हूं और लोगों को उनके सम्बन्धियों से अलग करवाने आया हूँ ? परन्तु वास्तव में ये बात जो प्रभु ने आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व कही थी इसका एक-एक शब्द पहली शताब्दी से लेकर आज तक यूँ ही पूरा होता आ रहा है। किसी भी मार्ग पर चलने के कारण मनुष्य को इतनी अधिक कठिनाइयों तथा अत्याचारों का सामना नहीं करना पड़ता जितना कि प्रभु के मार्ग पर चलने के कारण करना पड़ता है। धार्मिक दृष्टिकोण से एक मनुष्य कुछ भी बन सकता है, परन्तु यदि वह एक मसीही बन जाता है तो उसके ऊपर उपद्रव तथा अत्याचारों का पहाड़ टूट पड़ता है, और यहां तक, कि आज संसार में अनेकों भागों में लोगों पर मसीही बनने के लिए सरकारी तौर से प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

परन्तु इतना ही नहीं, जो बात प्रभु ने कहीं थी उसका एक-एक शब्द ज्यों का त्यों पूरा हो रहा है। प्रभु ने कहा था, कि मेरे कारण मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। और यह वास्तव में कितना सच है। मैं एक मसीही बंहन को जानता हूं जिनके मसीही बनने पर उनके पति व बच्चे उनके विरोधी बन गए। मैं एक मसीही भाई को जानता हूं जिनके मसीही बनने पर आज उनकी पत्नी और उनके माता-पिता और अन्य सभी सगे सम्बन्धी इत्यादि उनसे बैर रखते हैं। मैं एक और मसीही भाई को जानता हूं, वे जब से एक मसीही बने हैं उनके माता-पिता और उनके समाज के लोग उनके कट्टर विरोधी हो गए हैं। वास्तव में, मैं आपको ऐसे अनेकों लोगों के उदाहरण दे सकता हूं जो एक मसीही बनने

के कारण आज तरह-तरह के अत्याचारों का सामना कर रहे हैं, और वह भी अपने ही लोगों के द्वारा और अपने ही सगे सम्बन्धियों के हाथों।

किन्तु ऐसा क्यों है ? यूं तो इसके कई कारण दिए जा सकते हैं। जैसे कि प्रभु के बारे में लोगों के मनों का पूर्वद्वेष और उसके मार्ग के बारे में उचित ज्ञान की कमी। किन्तु इसका एक मुख्य कारण यह है, कि प्रभु का मार्ग एक सकरा मार्ग है, अर्थात उसके ऊपर केवल एक ही उद्देश्य से, इकहरे मन से, और एक ही मनसा से चला जा सकता है। इसका अभिप्राय है, कि यदि हम प्रभु के मार्ग पर चल रहे हैं, यदि हम उसका अनुसरण कर रहे हैं, तो हम अपने जीवन में उसके अतिरिक्त किसी भी अन्य वस्तु या व्यक्ति को उससे अधिक प्रिय नहीं समझेंगे, हम अपने जीवन में सबसे प्रथम स्थान केवल उसी को देंगे और यहां तक, कि उसके कारण हम अपने प्राणों को भी खो देना उचित समझेंगे। क्योंकि उसने कहा कि जो अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा, किन्तु जो मेरे कारण अपने प्राण खोता है वह उसे पाएगा। और उसने कहा, जो शरीर को हानि पहुँचाते हैं पर आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते उनसे न डरना परन्तु परमेश्वर से डरो जो शरीर और आत्मा दोनों का नाश कर सकता है। "जो मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा" प्रभु ने कहा, "उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।" वास्तव में, यीशु का अंगीकार करना परमेश्वर को मानना है, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप है, उसी ने हम पर सच्चे परमेश्वर को प्रगट किया। वह आदि में परमेश्वर के साथ था और स्वयं परमेश्वर था, (यूहन्ना १:१-३,१४), यद्यपि हमें बचाने के लिए उसे पृथ्वी पर आकर मनुष्य का रूप धारण करना पड़ा।

किन्तु, उसे परमेश्वर की इच्छा पर चलने के कारण अपने ही लोगों के हाथों अनेकों प्रकार के अत्याचारों का सामना करना पड़ा। पवित्र

शास्त्र बताता है, "कि वह अपने घर आया, किन्तु उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।" (यूहन्ना १:११)। क्या वह उसी का एक चेला नहीं था जिसने उसे उसके शत्रुओं के हाथों पकड़वा दिया? और क्या उसके शत्रु उसके अपने ही यहूदी लोग न थे? और फिर, जिन्होंने उसे क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मार डाला, क्या वे सब उसी की जाति के लोग न थे? किन्तु तौभी अपने प्राण निकलने से पहले यीशु ने उनके लिए यह कह-कर प्रार्थना की, "हे पिता, इन्हें क्षमा करे, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं,।" (लूका २३ : ३४)।

परन्तु, यीशु का अंगीकार करने से हमारा क्या अभिप्राय है? क्या इसका अर्थ केवल मुंह से यह कह देने से है कि हम उसे परमेश्वर का पुत्र मानते हैं? यद्यपि यह आवश्यक है कि हम ऐसा कहें, क्योंकि हम बाइबल में एक जगह देखते हैं कि जब फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया तो वह सुनकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ और एक मसीही बनने के लिये वह तुरन्त बपतिस्मा लेना चाहता था। सो उसने फिलि-प्पुस से कहा कि देख यहां जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक हैं? और हम देखते है, कि फिलिप्पुस ने उससे कहा, कि यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है। और जब उसने कहा, कि हां, मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है तो फिलिप्पुस ने खोजे को जल के भीतर ले जाकर उसी समय बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों :८)। किन्तु मसीह का अंगीकार केवल यही समाप्त नहीं हो जाता। परन्तु एक मसीही बनने के बाद मनुष्य को चाहिए कि वह प्रतिदिन अपने जीवन और अपने कामों से मसीह का अंगीकार करे। मसीह के पीछे क्रूस लेकर चलने का अभिप्राय: यही है। क्योंकि क्रूस दुख व संकट का प्रतीक है।

मसीह के अंगीकार के बारे में मुझे एक बड़ा ही सुन्दर तथा ऐति-हासिक वर्णन पोलीकार्प नाम के एक वृद्ध मसीही के विषय में याद आता

है। पोलीकार्प को २२ फरवरी सन १५६ में मसीह का अंगीकार करने के कारण जीवित आग में डाल दिया गया था। पोलिकार्प स्मुरना में मसीह की कलीसिया का एक अध्यक्ष था। ऐतिहासकार आईरेनियस बताता है कि वह यीशु के प्रेरितों का एक साथी था। उन दिनों रोमी सरकार की ओर से मसीही लोगों पर बड़े अत्याचार किए जाते थे। इतिहास बताता है, कि जब पोलिकार्प को पकड़कर उसकी वृद्ध अवस्था के कारण उसे छोड़ देने के दृष्टिकोण से उन्होंने उसे यीशु को प्रभु न कहकर कैसर (अर्थात रोम के राजा) को प्रभु कहने पर मजबूर किया और जब वह न माना तो उन्होंने उसे अधिकारियों के सामने पेश किया। वहां उसे जब उन्होंने यूं कहा कि यदि तू मसीह की निन्दा करेगा तो हम तुझे छोड़ देगें। इस पर पोलीकार्प ने उन्हें जवाब देकर यूं कहा, "छियासी वर्षों से मैं उसी का दास रहा और उसने मेरे साथ कोई बुराई न की, और वह तो मेरा राजा और मेरा बचानेवाला है, सो मैं उसकी निन्दा कैसे कर सकता हूं।" और जब उन्होंने उससे कहा, कि यदि तू ऐसा नहीं करेगा तो हम तुझे ज़िन्दा बान्धकर आग में डाल देगें। तो उसने उनसे कहा, "तुम मुझे उस आग से डराना चाहते हो जो कुछ ही समय जलने के बाद बुझ जाती है, क्योंकि तुम उस आग को नहीं जानते जिसमें न्याय के दिन अनन्त विनाश का दण्ड पाने के लिए सारे अधर्मी डाले जाएंगे।" और उसी समय उन्होंने उसे बांधकर आग में डाल दिया।

मित्रो, इसमें कोई संदेह नहीं, कि शताब्दियों से हज़ारों लोगों को मसीह का अंगीकार करने के कारण अनेकों प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ा। परन्तु हम जानते हैं कि यदि हम उसके साथ दुख उठाएंगे तो हम उसके साथ महिमा भी पाएंगे। क्योंकि वह कहता है, कि प्राण देने तक विश्वासी रहे तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा। (प्रकाशितवाक्य २:१०)।

सो अब अन्त में, मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि यदि आपको शांति व आशा की आवश्यकता है, यदि आपको अपनी आत्मा को बचाना है—तो यीशु आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

क्या आप अपना जीवन उसे देने के लिए तैयार हैं? वह आपसे प्रेम करता है, और आपको बचाना चाहता है।

—:०:—

मसीह का प्रेम

मित्रो,

मेरे विचार में संसार की किसी भी भाषा में सबसे अधिक शक्तिशाली शब्द "प्रेम" है। किसी भी अन्य शब्द में इतना अधिक आकर्षण तथा प्रभाव नहीं है जितना कि प्रेम शब्द में है और यदि इस शब्द के अर्थ को उचित ढंग से समझा व उपयोग में लाया जाए, तो इसमें कोई संदेह नहीं, कि यह संसार जिसमें हम रहते हैं एक छोटा सा स्वर्ग बन सकता है। पवित्र शास्त्र में एक जगह उपदेशक कहता है, "बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं।" (नीति वचन १०:१२) नए नियम में प्रेरित कहता है, "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है, प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता वह बातें सह लेता है।" (१ कुरिन्थियों १३)। और फिर एक और जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि, जब एक बार एक शास्त्री प्रभु यीशु से यह पूछने के लिए आया, की सारी आज्ञाओं में सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है? तो यीशु ने जवाब देकर कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं" (मरकुस १२:३०,३१)। और फिर, इसी संदर्भ में प्रेरित पौलुस एक स्थान पर कहता है, "आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है उसी ने व्यवस्था पूरी की है। क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना,

हत्या न करना, चोरी न करना, लालच न करना, और इन को छोड़ और कोई आज्ञा हो तो सबका सारांश इस बात में पाया जाता है कि अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख। प्रेम पड़ौसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।" (रोमियों १३:८-१०)।

सो इस प्रकार, हम देखते हैं, कि मनुष्य के जीवन में प्रेम का सबसे प्रमुख स्थान है। यदि किसी परिवार में परिवार के सदस्य आपस में एक दूसरे से प्रेम न रखें तो वह परिवार कलह और विनाश का स्थान बन जाएगा। यदि लोग अपने मुल्क से प्रेम न रखें तो वह देश कमज़ोर और तहस-नहस हो जाएगा। परन्तु प्रेम न केवल सांसारिक दृष्टिकोण से ही प्रमुख है। किन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से भी प्रेम का स्थान सबसे बड़ा और प्रमुख है, धार्मिक या आत्मिक बातों में यूं तो विश्वास तथा आशा का स्थान यद्यपि बहुत बड़ा है, किन्तु पवित्र शास्त्र कहता है, "पर अब विश्वास, आशा और प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इसमें सबसे बड़ा प्रेम है। (१ कुरिन्थियों १३:१३)।

परन्तु आज मैं आपसे न तो उस प्रेम के बारे में कुछ कहने जा रहा हूं जिसकी आवश्यकता मनुष्य को मनुष्य के प्रति है। न ही हम उस प्रेम के बारे में देखने जा रहे हैं जिसकी आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर के प्रति है। परन्तु आज मैं आपको उस प्रेम के बारे में बताने जा रहा हूं जिसका महत्व स्वर्ग और पृथ्वी दोनों के ही दृष्टिकोण में बहुत बड़ा है। और वह प्रेम है: यीशु मसीह का प्रेम।

जब हम यीशु मसीह के जीवन पर विचार करते हैं तो हमें उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में कोई भी ऐसा स्थान नहीं दीखता जहाँ प्रेम का ज़रा सा भी अभाव हो। वास्तव में, सच्चाई तो यह है, कि चाहे हम यीशु मसीह के जन्म के सम्बन्ध में देखें या उसके जीवन के, और हम चाहे उसकी मृत्यु के बारे में देखें, उसके व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू में हमें प्रेम ही प्रेम नज़र आता है। उदाहरण के रूप से जब हम उसके जन्म के

सम्बन्ध में देखते हैं, तो उसके पृथ्वी पर आने का इसके अतिरिक्त हमें और कोई कारण दिखाई नहीं देता कि वह हमसे सचमुच में प्रेम करता है। पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि वह आदि में परमेश्वर के साथ था। अर्थात वह वचन के रूप में परमेश्वर के साथ स्वर्ग में विद्यमान था। किन्तु क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है, और वह उसे उसके पापों के कारण नरक में जाने से बचाना चाहता है, इसलिए उसने अपने वचन को देहधारी होने के लिए जगत में भेज दिया, ताकि वह मनुष्य के स्वरूप में होकर सबके पापों के कारण दुख उठाए, और मारा जाए, और उसके कारण जगत उद्धार पाए। यही कारण है कि जब उसका जन्म हुआ था, तो एक स्वर्गदूत ने लोगों के एक झुंड पर प्रगट होकर यूं कहा था कि "मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं। जो सब लोगों के लिए होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।" (लूका २:१०,११)। परन्तु यदि वह हमसे प्रेम न करता तो उसे पवित्र स्वर्ग छोड़कर इस पापपूर्ण पृथ्वी पर आने की क्या आवश्यकता थी ? उसे क्या आवश्यकता थी कि वह मनुष्य का रूप धारण करता और मनुष्य की समानता में होकर मनुष्य का सा जीवन व्यतीत करता ? फिर हम यह भी देखते हैं, कि जब उस स्वर्गीय वचन ने देहधारी होकर मनुष्य का स्वरूप धारण किया, तो उसने किसी महल या भवन में जन्म नहीं लिया, परन्तु उसका जन्म पशुओं के बीच एक पशुशाला में हुआ। किन्तु यदि वह हमसे वास्तव में प्रेम न करता तो उसे नीचे आने की और इस प्रकार जन्म लेने की क्या आवश्यकता थी ?

और फिर, जब हम उसके जीवन पर विचार करते हैं, तो वहां भी हमें प्रेम का प्रमुख स्थान मिलता है। कितनी ही बार हम उसके विषय में पढ़ते हैं, कि लोगों को विभिन्न परिस्थितियों में देखकर उसका मन व्याकुल हो उठा, और यहां तक कि वह बालकों के समान उनके लिए रो पड़ा। एक जगह उसके बारे में लिखा है, "और यीशु सब नगरों और

गांवो में फिरता रहा और उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। (मत्ती ९:३५-३६)। और जब वह मरथा और मरियम के साथ उनके भाई लाज़र की कब्र पर जा रहा था, तो लिखा है, "यीशु के आंसू बहने लगे।" (यूहन्ना ११:३५)। यीशु के प्रेम का एक और उदाहरण हमें इन सुन्दर शब्दों में मिलता है "थोड़े दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया और उसके चेले और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी। जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो लोग एक मुर्दे को बाहर लिए जा रहे थे, जो अपनी मां का इकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी : और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे। उसे देखकर प्रभु को तरस आया, और उससे कहा; मत रो। तब उसने पास आकर अर्थी को छुआ, और उठाने वाले ठहर गए, तब उसने कहा, हे जवान मैं तुझसे कहता हूं, उठ। तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा : और उसने उसे उसकी माँ को सौंप दिया।" (लूका ७ : ११-१५) और एक और जगह उसके बारे में हम यूं पढ़ते हैं, कि जब वह कुछ लोगों के साथ भोजन करने बैठा तो कुछ लोग जो अपने आपको बड़ा धर्मी समझते थे, उस पर यह कहकर दोष लगाने लगे, कि यह तो अधर्मियों और पापियों के साथ खाता-पीता है। इस पर यीशु ने उनसे कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं परन्तु बीमारों को है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने के लिए आया हूं। (मरकुस २ : १३-१७; लूका ५:२९-३२)। इन सभी बातों से हम देखते है कि यीशु के जीवन में लोगों के लिए कितना अदभुत प्रेम था।

परन्तु उसका प्रेम असीमित था; और वह महान है! क्योंकि

उसका प्रेम उसके जीवन तक ही सीमित न था। परन्तु उसने अपनी इच्छा से अपने जीवन को भी जगत के सब लोगों को बचाने के लिये दे दिया। एक जगह उसने कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है...पिता इसलिए मुझसे प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझसे छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का भी अधिकार है और उसे फिर लेने का भी अधिकार है। यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।" (यूहन्ना १०: ११, १७-१८)। क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसका वचन, जिसे उसने मनुष्य की समानता में देहधारी बनाकर इस पृथ्वी पर भेजा था, जगत के सारे लोगों के पापों के कारण मृत्यु के द्वारा बलिदान हो। क्योंकि लिखा है, कि सबने पाप किया है, और पाप की मजदूरी अर्थात उसका अंजाम मृत्यु है। सो यदि परमेश्वर यीशु को हमारे पापों के कारण मृत्यु दन्ड न दिलवाता, तो हमारे पापों का उचित दाम कदापि न भरा गया होता। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमसे ऐसा प्रेम रखा कि हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए उसने अपने पुत्र को मरने के लियें भेज दिया ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। यदि यीशु मनुष्य से सचमुच में प्रेम न रखता तो मनुष्य अपने ही पापों में सदा के लिए नाश हो जाता। परन्तु क्योंकि यीशु ने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा कि वह हम सबके पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस के ऊपर चढ़ गया, जहां उसने हम सबके प्रत्येक अपराध के कारण अत्यन्त दुख सहा, और हमारे प्राणों को बचाने के लिए अपने आपको बलिदान कर दिया। इसलिए आज हम यीशु के द्वारा नरक के अनन्त विनाश से बचकर स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

मित्रो, सचमुच में यीशु का प्रेम कितना महान है। किन्तु, जबकि उसने हमारे उद्धार के लिए इतना बड़ा काम किया है, वह चाहता है

कि हम में से हर एक उस उद्धार को प्राप्त करने लिए उसमें विश्वास लाए और अपने पापों से मन फिराकर, अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले। (प्रेरितों २ : ३८; २२ : १६)। जी हाँ, वह आपका उद्धार करने के लिए तैयार है। क्या आप उस बड़े उद्धार को प्राप्त करने के लिए उसकी बात मानने को तैयार हैं ?

यीशु आपसे प्रेम करता है, वह आपको बचाना चाहता। उसके पास आईये। परमेश्वर आपकी अगुवाई करे।

—:०:—

मसीह का जीवन

मित्रो,

संसार में शताब्दियों से अनेकों बड़े-बड़े प्रसिद्ध लोग हुए हैं। उन प्रसिद्ध लोगों में कुछ राजा महाराजा थे, कुछ विद्वान और कुछ राजनीति के लोग थे। उनमें से बहुतेरे आज या तो अपने-अपने अच्छे कामों के कारण याद किए जाते हैं, या फिर अपने साहस, या बुरे कामों के कारण। परन्तु उनमें से किसी के लिए भी, चाहे वे धार्मिक हों, या अधार्मिक यह पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ कहा जा सकता है, कि उनमें से किसी का भी जीवन पृथ्वी पर सम्पूर्ण मानव जाति को कदापि प्रभावित न कर सका। उदाहरण के रूप से, जिन प्रसिद्ध लोगों के बारे में हम अपने देश में जानते हैं, उनके बारे में अन्य देशों के लोग अधिकांश रूप से बिल्कुल अनजान हैं। और इसी तरह, जो लोग अन्य देशों में बड़े ही प्रसिद्ध हैं, हम अपने देश में उनके बारे में कोई ज्ञान नहीं रखते।

परन्तु आज मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताने जा रहा हूं जिसके जीवन का प्रभाव इतना लम्बा और चौड़ा और इतना गहरा और ऊँचा है, कि पृथ्वी पर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने उसके बारे में कभी न सुना हो। उसका नाम पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक जाना जाता है। उसका प्रभाव संसार के सभी स्थानों पर दीख पड़ता है, घाटियों में लोग उसे जानते हैं, और पहाड़ों पर रहने-वाले लोग भी उसे अपना प्रभु कहते हैं। उसका नाम है : यीशु मसीह, प्रभु यीशु और कुछ लोग उसे ईसा भी कहते हैं।

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है, कि जब आप अपने

दफ़्तरों या स्कूलों में कुछ लिखते हैं, तो आप कागज के ऊपर सन् १९८० क्यों डालते हैं ? या जब आप अपने किसी मित्र या सम्बन्धि को एक पत्र लिखते हैं तो उस पर आप १९८० क्यों लिखते हैं ? इसका एकमात्र अर्थ यह है, कि आज से १९८० वर्ष पूर्व यीशु मसीह का जन्म हुआ था। यही कारण है, कि यीशु के जन्म के बाद के प्रत्येक वर्ष को ईसवी सन् कहा जाता है, अर्थात ई० स० १९८० जिसमें आज हम रहते हैं। और इस पर भी ध्यान दें, कि यीशु के जन्म के पूर्व के समय को सम्बोधित करने के लिये हम हमेशा ईसवी पूर्व या ईसा पूर्व कहते हैं। संसार में सभी देशों की सरकारें ईसवी पूर्व और ईसवी सन् का इस्तेमाल करती है। क्या यही एक बात विश्व भर में यीशु मसीह के प्रभाव को प्रमाणित नहीं करती ? किन्तु कौन सा ऐसा देश है जिसमें लोग यीशु को नहीं जानते और उसकी उपासना नहीं करते ? चाहे आप चीन के पीले लोगों के पास जाएँ या अफ्रीका के काले लोगों के पास, उस देश के लोग चाहे लाल हों या सफेद, किन्तु जिस किसी देश में भी आप जाएँगे वहां आपको ऐसे बहुतेरे लोग मिलेगें जो यीशु को अपना प्रभु मानते हैं। सिद्धांत हों या उपदेश, साहित्य हो या सभ्यता, कोई भी ऐसा स्थान हमें नहीं मिलता जहाँ यीशु के सामर्थपूर्ण जीवन का प्रभाव न गया हो। चाहे लोग यीशु में विश्वास रखते हों या न रखते हों, किन्तु वे उसके सिद्धांतों और शिक्षाओं के उदाहरण देते हैं। संसार के विभिन्न देशों में अनेकों ऐसे प्रमुख लीडर हुए हैं जिन्होंने यीशु के जीवन से प्रेरणा लेकर मानवता के लिए बड़े - बड़े काम किए हैं।

एक लेखक ने यीशु के जीवन का संक्षिप्त वर्णन इन सुन्दर शब्दों में किया है : "उस व्यक्ति का जन्म एक छोटे से गांव में हुआ था। वह एक गरीब स्त्री का बालक था। एक छोटे से ही गांव में उसका पालन-पोषण हुआ था। तीस वर्ष की आयु तक वह एक बढ़ई की दुकान में काम किया करता था, और फिर उसके बाद तीन साल तक उसने इधर-

उधर घूम-फिरकर शिक्षा और उपदेश दिए। उसने कभी किसी पुस्तक की रचना नहीं की। वह कभी किसी अधिकारी की नाई कुर्सी पर न बैठा, उसके पास अपना कोई घर नहीं था। उसका कोई परिवार नहीं था। वह कभी भी किसी विद्यालय या कॉलेज में पढ़ने नहीं गया। और जहां उसका जन्म हुआ था, वहां से दो सौ मील की दूरी से अधिक कभी उसने कोई यात्रा नहीं की। उसने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया। जिनके कारण अकसर लोग प्रसिद्ध और महान कहलाते हैं। अपने व्यक्तित्व को प्रमाणित करने के लिए स्वयं अपने आप के अतिरिक्त उसके पास कोई और प्रमाण नहीं था। और जो प्रमाण उसके पास था, अर्थात उसका अद्भुत ईश्वरीय व्यक्तित्व, उसका इस संसार से कोई संबन्ध न था। और अभी जबकि वह जवान ही था, वे लोग जो उससे ईर्ष्या और डाह रखते थे लोगों को उसके विरोध में भड़काने में सफल हुए। उसके मित्र उसे छोड़कर भाग गए। उनमें से एक ने उसका इन्कार कर दिया। और उसके शत्रुओं ने उसे आकर पकड़ लिया। न्याय के नाम पर उसके साथ हंसी वा ठट्ठा किया गया। और दो डाकुओं के बीच मे उसे एक क्रूस पर लटका दिया गया। और जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके तो उन्होंने उसके उन वस्त्रों को, जो उन्होंने उसके शरीर पर से उतारे थे, और जो पृथ्वी पर उसकी एक मात्र सम्पत्ति थी, चिट्ठियाँ डालकर आपस में बांट लिया। जब वह मर गया तो उसके कुछ मित्रों ने उसकी लोथ को क्रूस पर से उतारकर एक कब्र के भीतर दफ़ना दिया। तब से लेकर आज तक उन्नीस शताब्दियां आकर जा चुकी हैं। आज सम्पूर्ण मानवता के बीच उसका एक प्रमुख स्थान है। और वह अनेकों जीवनों की अगुवाई कर रहा है। और यदि मैं यूं कहूं, तो यह भी उसके बारे में वास्तव में बहुत कम होगा, कि जितनी भी सेनाएं आज तक पृथ्वी पर बनाई गईं, और जितनी भी अदालतें आज तक पृथ्वी पर बैठीं, और जितने भी राजाओं ने आज तक पृथ्वी के ऊपर राज्य किया वे सब-के-सब मिलकर भी इस पृथ्वी पर मनुष्य को इतना

अधिक प्रभावित न कर सके जितना कि उस अकेले जीवन ने किया है।"

हां, वास्तव में, यीशु का जीवन प्रभावपूर्ण, प्रेरणादायक और आदर्शपूर्ण था। किन्तु तीन ऐसी बड़ी ही विशेष बातें हैं जो हम प्रभु यीशु के जीवन से सीखते हैं। सबसे पहले तो यह, कि उसका जीवन स्वार्थ-रहित अर्थात बलिदानवाला जीवन था। उसने कभी भी अपने लिये कुछ इकट्ठा न किया। जो कुछ भी उसके पास था, यहां तक कि अपने प्राणों को भी उसने लोगों के लिये दे दिया। एक जगह वह अपने प्राणों के विषय में यूं कहता है, "कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं : मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है : यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।" (यूहना १०:१८)। प्रेरित यूहन्ना एक जगह यीशु के बलिदान का स्मरण दिलाकर यूँ कहता है, "हमने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिये अपने प्राण दे दिये। और हमें भी भाईयों के लिये प्राण देना चाहिए।" (१ यूहना ३ : १६)।

और दूसरी विशेष बात जो हम यीशु के जीवन से सीखते हैं, वह यह है, कि उसका जीवन दूसरों की भलाई करनेवाला जीवन था। कितनी ही बार हम उसके विषय में देखते हैं, कि जब उसने लोगों को भूखा देखा तो उसे उन पर बड़ा तरस आया और उसने उन्हें भोजन खिलाया। जब कभी भी उसने किसी को बीमार देखा या लोग किसी रोगी को उसके पास लाए तो उसने तत्काल उसे चंगा किया। वह गाली सुनकर किसी को गाली नहीं देता था। और अपने सतानेवालों के लिये सदा परमेश्वर से प्रार्थना करता था। एक जगह उसने कहा, "कि बुरे का सामना न करना, परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भीं फेर दे।" (मत्ती ५:३९)। यीशु का एक चेला जिसका नाम मत्ती था उसके बारे में हमें यूं बताता है, कि जब यीशु बपतिस्मा ले चुका, तो वह "सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं

में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" (मत्ती ४ : २३)। यीशु ने अपने अनुयायियों को एक बार शिक्षा देकर कहा, कि जिस प्रकार दिए के जलने से घर के सारे लोगों को प्रकाश पहुंचता है, "उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती ५:१६)।

और फिर तीसरी मुख्य बात जो हम यीशु के जीवन से सीखते हैं, वह यह है, कि यीशु का जीवन आज्ञा माननेवाला जीवन था। उसने अपने जीवन में जो कुछ भी किया उस सबके विषय में उसने यही कहा, कि ऐसा करने की आज्ञा मुझे अपने पिता से मिली है। अभी कुछ ही देर पहिले हमने यीशु के इन शब्दों को देखा था, जहां उसने कहा, कि मैं अपना प्राण इसलिये देता हूं क्योंकि यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है। परमेश्वर ने यीशु को इस पृथ्वी पर इसीलिए भेजा था, ताकि उसके प्राणों के बलिदान के कारण जगत उद्धार पाए। यह परमेश्वर की इच्छा थी, कि उसका पुत्र हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए मारा जाए ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। और यीशु ने परमेश्वर की इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए अपने आपको क्रूस की मृत्यु के हवाले कर दिया। प्रेरित पौलुस यीशु का उदाहरण देकर एक जगह इस प्रकार कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था। वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों २:५-८)। और एक और जगह लेखक यूं कहता है, "पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध

बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५ : ८,९)।

मित्रो, यीशु का जीवन वास्तव में अनुसरण करने के योग्य है। किन्तु यीशु के जीवन का अनुसरण करना ही काफ़ी नहीं है। परन्तु यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो हमें उसकी आज्ञाओं को मानना भी बड़ा ही आवश्यक है। क्योंकि वह अपने आज्ञा माननेवालों के लिए उद्धार का कारण है। और उसकी आज्ञा यह है, कि यदि कोई उद्धार पाना चाहे तो वह उसमें विश्वास लाए, और पापों से मन फिराए, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले।

सो मेरा विश्वास है, कि आज के पाठ से आप अवश्य ही लाभ उठाएंगे। परमेश्वर अपनी इच्छानुसार हम सब को आशीष दे।

---: ० :---

मसीह की मृत्यु

मित्रो,

संसार में ऐसी अनेकों वस्तुएं हैं जिनसे मनुष्य को बड़ा ही भय लगता है। हम जंगली जानवरों से डरते हैं, हमें दुर्घटना और बीमारी से डर लगता है, और इसी प्रकार की बहुतेरी और भी वस्तुएं हैं जिनसे हम सभी डरते हैं। परन्तु जिस वस्तु से हम सबसे अधिक डरते हैं वह है "मृत्यु"। हम सब मृत्यु से डरते हैं, और हम में से कोई भी मृत्यु से प्रेम नहीं करता। यदि हम किसी दुर्घटना इत्यादि के कारण बीमार पड़ जाते हैं तो हम अपना अच्छे से अच्छा ईलाज करवाना चाहते हैं, क्योंकि हम डरते हैं कि कहीं हम मर न जाएं। यदि किसी की मृत्यु हो जाती है और हमें पता चलता है, तो ऐसा समाचार सुनकर हमें बड़ा ही दुःख होता है और हम शोक करते है। और यह सब बड़ा ही स्वाभाविक है। क्योंकि मृत्यु एक ऐसी वस्तु है जो हम में से एक दूसरे को सदा के लिए अलग कर देती है, जिन्हें हम अपना बड़ा ही प्रिय और अपने बड़े ही समीप समझते हैं मृत्यु उन्हें हमसे सदा के लिए अलग कर देती है।

परन्तु आज हम एक ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के बारे में देखने जा रहे हैं जिसकी मृत्यु भय के विपरीत विजय बन गई, और शोक के विपरीत सुसमाचार बन गई; वह मृत्यु जो हमें एक दूसरे के साथ और हमारे परमेश्वर के साथ एक करती है। और वह है: यीशु मसीह की मृत्यु।

यीशु मसीह आपकी और मेरी तरह आज से लगभग दो हज़ार

वर्ष पूर्व पृथ्वी पर रहता था। परन्तु यीशु के बारे में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात हम यह देखते हैं कि उसके जन्म, जीवन, और उसकी मृत्यु में एक बड़ा ही विशेष उद्देश्य था। और यहां तक, कि उसके जन्म से बहुत समय पूर्व से ही अनेकों भविष्यद्वक्ताओं ने समय-समय पर परमेश्वर से प्रेरणा पाकर उसके आने के बारे में लोगों को बताया था। और जब उसका जन्म हुआ, तो पवित्र शास्त्र हमें बताता है, कि उस देश में एक जगह कुछ गड़रिये रात को मैदान में रहकर अपने झुंड का पहरा दे रहे थे, कि अचानक, हम पढ़ते हैं, "प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ; और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए, तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिए होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु हैं।" (लूका २ : ८-११)। इसी प्रकार, यीशु का जीवन भी सामर्थ वा उद्देश्य से परिपूर्ण था। एक जगह उसके बारे में हम पढ़ते हैं : "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे, न्यायी के हाथ में सौंपता था।" (१ पतरस २ : २२, २३)। यीशु की शिक्षा और उपदेश सुनकर लोग आश्चर्य चकित हो जाते थे, क्योंकि वह मनुष्यों की तरह शिक्षा नहीं देता था। उसके आश्चर्यजनक कार्य देखकर लोग दंग रह जाते थे। परन्तु यीशु के जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण उसकी मृत्यु थी। वास्तव में उसके जीवन का विशेष उद्देश्य ही मृत्यु था।

एक बार नीकुदेमुस नाम के एक व्यक्ति से बातें करते हुए यीशु ने कहा, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर

चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उसमें अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १४—१६)। इस कथन में प्रभु यीशु का संकेत सैंकड़ों वर्ष पूर्व घटी उस घटना के ऊपर था जबकि परमेश्वर ने इस्त्राएलियों की यात्रा के दौरान उनके अधर्म के कारण उनके बीच में तेज़ विषवाले सांप भेजे थे। परन्तु जब उनमें से बहुतेरे मर गए तो वे मूसा से बिनती करके कहने लगे कि हमें बचाने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर। सो जब मूसा ने परमेश्वर से उनके लिये बिनती की, तो परमेश्वर ने आज्ञा देकर मूसा से कहा कि तू साँप की एक प्रतिमा बनाकर उसे ऊँचे पर लटका और सांप का डसा हुआ जो कोई भी मनुष्य उस प्रतिमा को देखेगा वह बच जाएगा। सो इसी घटना की ओर संकेत करके प्रभु यीशु ने कहा, कि इसी तरह वह भी ऊंचे पर लटकाया जाएगा। और जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह नरक से बचकर अनन्त जीवन पाएगा। और यह बात उस समय पूरी हुई जब यीशु वास्तव में क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया।

पवित्र शास्त्र कहता है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ।" (१ पतरस २ : २४)। जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। सो यीशु केवल इसलिये नहीं मरा क्योंकि एक न एक दिन सभी मनुष्यों को मरना है, परन्तु यीशु की मृत्यु में एक बड़ा ही विशेष उद्देश्य था। परमेश्वर ने उसे मनुष्यों के हाथों से क्रूस के ऊपर चढ़वा-कर इसलिए मृत्यु दण्ड दिलवाया ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, वह हमें

बचाना चाहता है और हमारा उद्धार करना चाहता है, इसलिये उसने हमारे पापों के कारण अपने पुत्र यीशु को जिम्मेदार ठहराकर उसे हमारे स्थान पर दण्डित किया। सो इसलिये, यीशु की मृत्यु हमारे लिए एक सुसमाचार और अनन्त जीवन का कारण है।

अभी कुछ ही समय पूर्व मुझे एक बड़ी ही अद्भुत बात मेरे एक मित्र ने बताई, जिसके बारे में उन्हें एक भेड़-पाल अर्थात् चरवाहे ने बताया था।। उसने कहा, कि यदि भेड़ों के झुँड में से किसी एक भेड़ की मृत्यु हो जाती है, तो उसके छोटे बच्चे को कोई भी अन्य भेड़ दूध नहीं पिलाती और इस कारण उस बच्चे की भी मृत्यु हो जाती है। परन्तु उसने आगे बताया, कि यदि उन्हीं दिनों किसी अन्य भेड़ के एक दूध पीनेवाले बच्चे की मृत्यु हो जाए और यदि उस मरे हुए बच्चे का ऊन उतारकर उस यतीम बच्चे के शरीर पर लगा दिया जाए तो वह भेड़ उस यतीम बच्चे को अपना ही बच्चा समझकर दूध पिलाने लगती है। अर्थात्, इस बच्चे की मृत्यु उस दूसरे बच्चे के लिये जीवन का कारण बन जाती है !

इसी प्रकार, मित्रो, प्रभु यीशु की मृत्यु हमारे लिये अनन्त जीवन का कारण बन गई। क्योंकि वह हम सबके लिये मारा गया; परमेश्वर ने उसे हम सबके लिये पाप ठहराकर दन्डित किया, और उसे हम सबका प्रायश्चित ठहराया। पवित्र शास्त्र कहता है : "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ६-८)।

मित्रो, यदि यीशु मसीह हमारे लिये न मरा होता, यदि वह हम में से

हर एक के लिये पाप न ठहराया जाकर मृत्यु का स्वाद न चखता, (इब्रानियों २ : ६), तो आज हम सब अपने पापों की दशा में खोए, और आशा रहित होते। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हम सबसे ऐसा प्रेम रखा कि हमें बचाने के लिये उसने हमारे अधर्म वा अपराधों के दण्ड को स्वयं अपने ऊपर लेकर, अपने एकलौते पुत्र यीशु को हम सबके पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान किया। आज हमारे पास यीशु मसीह की मृत्यु के कारण उद्धार पाने का एक मार्ग है, हमारे पास अनन्त जीवन में प्रवेश करने की एक आशा है। और मित्रो, वह एकमात्र मार्ग वा आशा प्रभु यीशु मसीह है, क्योंकि उसने अपने प्राणों को हम सब के लिए बलिदान किया।

प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि कोई मनुष्य मेरे सुसमाचार को सुनकर मुझमें विश्वास करेगा और अपने पापों से मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा तो उसका उद्धार होगा।

प्रभु आपको इस विषय में उचित निश्चय करने के लिए सुबुद्धि दे। उसी की आशीष हम सब पर बनी रहे।

—: ० :—

मसीह का पुनरुत्थान

मित्रो,

यद्यपि अपने पिछले पाठ में हम ने प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित कुछ आवश्यक बातों के ऊपर विचार किया था; अर्थात् हम ने देखा था कि हमारे जीवनों में मसीह की मृत्यु का कितना बड़ा महत्व है। क्योंकि यदि मसीह क्रूस के ऊपर हमारे पापों के कारण न मरता, तो आज हम सब के सब अपने पापों में, उद्धार के बिना वा आशारहित होते। परन्तु क्योंकि यीशु मसीह ने हमारे पापों के कारण हम में से हर एक के लिए मृत्यु का स्वाद चखा, इसलिये हम जानते हैं कि आज हम यीशु के द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके उद्धार पा सकते हैं।

परन्तु आज मैं आप को यह बताना चाहता हूं कि यीशु की मृत्यु से भी कहीं अधिक बढ़कर महत्वपूर्ण स्थान उसके पुनरुत्थान का है। क्योंकि यदि यीशु मरे हुओं में से न जी उठता, तो न केवल वह इस कारण एक झूठा व्यक्ति ही ठहरता, क्योंकि उसने अपने जीते जी यह दावा किया था, कि अपनी मृत्य के तीन दिन बाद मैं फिर से जी उठूँगा, परन्तु आज वह हमारा उद्धारकर्त्ता भी न होता क्योंकि एक मरा हुआ व्यक्ति कभी भी किसी डूबते हुए को नहीं बचा सकता। और प्रेरित पौलुस तो पवित्र शास्त्र में एक जगह यहाँ तक कहता है कि "यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। वरन हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी, कि उसने मसीह को जिला

दिया ... ... और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो।" (१ कुरिन्थियों १५:१४ ,१५, १७)।

सो हम देखते हैं कि यीशु मसीह के पुनरूत्थान का महत्व सभी अन्य बातों में कितना अधिक बड़ा है। क्योंकि यदि यीशु मुर्दों में से न जी उठा होता, तो उसकी मृत्यु के बाद कभी भी उसका प्रचार न किया जाता, और न कभी उस पर कोई विश्वास करता; न आज मसीहीयत होती और न मसीह की कलीसिया आज संसार में होती। क्योंकि जैसा कि हम देखते हैं, कि जब यहूदियों ने उसके प्रति डाह से भरकर उसे मृत्यु दन्ड दिलवाने के लिये पकड़वाया था, तो उसके सभी चेले उसे छोड़कर तित्तर-बित्तर हो गए थे। और जब उन्होंने उसे क्रूस के ऊपर लटकाकर मार डाला, और उसके कुछ मित्रों ने उसकी लोथ को क्रूस पर से उतराकर एक कब्र में गाड़ दिया, तो उसके चेले, यह जानकर कि अब सब कुछ समाप्त हो चुका है, वापस अपने काम धन्धों में लग गए थे। परन्तु फिर क्या हुआ ?

पवित्र बाइबल बताती है कि, "दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा, हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा। सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरूए तो हैं, जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। सो वे पहरूओं को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।" (मत्ती २७:६२-६६)।

और फिर, इसके बाद हम यूं पढ़ते हैं कि "सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं। और देखो, एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठा गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाई उज्वल था। उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो : मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है, आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है, और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैंने तुम से कह दिया। और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं। और देखो, यीशु उन्हें मिला, और कहा, 'सलाम' और उन्होंने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसे दन्डवत किया। तब यीशु ने उनसे कहा, मत डरो, मेरे भाईयों (अर्थात चेलों से) जाकर कहो, कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेंगे।

वे जा ही रही थीं, कि देखो, पहरूओं में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया। तब उन्होंने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चांदी देकर कहा, कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। सो उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे वैसा ही किया, और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।

और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को संदेह हुआ। यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ। " (मत्ती २८)। इसके बाद, बाइबल बताती है, कि चेलों के देखते-देखते प्रभु यीशु ऊपर उठा लिया गया और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। (प्रेरितों १:९)।

परन्तु स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, हम पढ़ते हैं, कि यीशु चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा, और इस अवधि में वह अनेकों लोगों को दिखाई दिया। एक जगह लिखा है, कि वह एक बार पांच सौ से भी अधिक लोगों को दिखाई दिया। और जब वह ऊपर उठा लिया गया, तो उसके वही चेले, जो उसकी मृत्यु के कारण उसके शत्रुओं के भय से अपना साहस तोड़कर इधर-उधर जा छिपे थे, अब उसके मुर्दों में से उठने के कारण निडर होकर जोश वा उत्साह से भरकर उसके पुनरूत्थान का प्रचार करने लगे। वे हर जगह लोगों को बताने लगे, कि यीशु जो हमारे बीच में रहा और जिसने अनेकों बड़े बड़े अद्‌भुत काम हमारे बीच में रहकर किए, वह हमारे पापों के लिए मारा गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा, और हम इन सब बातों के गवाह हैं। और जिन्होंने उनकी गवाही के ऊपर विश्वास किया, उनसे उन्होंने कहा, कि तुम अपना मन फिराओ और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो। पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि हज़ारों लोगों ने इन बातों पर विश्वास किया और प्रभु की आज्ञा का पालन किया।

(प्रेरितों २; १ कुरिन्थियों १५:१-४)। और इसीलिए आज संसार भर में मसीहीयत है, मसीही लोग हैं, और मसीह की कलीसिया है। और इसीलिए आज हम उसी प्रभु यीशु मसीह का प्रचार करते हैं, जो हम सब के पापों के लिए मर गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठा।

परन्तु आज संसार में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो कहते हैं कि यीशु वास्तव में क्रूस पर नहीं मरा किन्तु वह क्रूस पर केवल मूर्छित या बेहोश हो गया था, और कब्र में जब उसे होश आया तो वह उसमें से बाहर निकल आया।

परन्तु बाइबल बताती है, कि यीशु ने क्रूस के ऊपर अपने प्राण त्याग दिये थे। अपनी मृत्यु के पूर्व की संध्या को जब वह प्रार्थना में लीन था तो उसके शत्रुओं ने आकर उसे पकड़ा था, फिर वे उसे शीघ्र ही मृत्यु दन्ड दिलाने के दृष्टिकोण से रात भर हाकीमों के सामने उस पर दोष लगाते रहे, और जब वह झूठे गवाहों के आधार पर दोषी ठहराया जा चुका, तो उसे कोड़ों इत्यादि से पीटा गया। फिर उन्होंने उसके कांधों पर उसका क्रूस लादकर उसे लेकर चलने पर मजबूर किया। जब वे उस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने उसी क्रूस के ऊपर लिटाकर उसके हाथ पाँव कीलों से क्रूस के ऊपर ठोक दिए, और फिर क्रूस को खड़ा करके उन्होंने यीशु को आकाश और पृथ्वी के बीच में लटका दिया। और इस प्रकार यीशु उस क्रूस के ऊपर छ: घंटे तक लटका रहा, और फिर उसने अपने प्राण छोड़ दिए। फिर हम देखते हैं, कि रोमी सिपाहियों ने आकर उसकी जांच कि और स्वयं उन्होंने इस बात की घोषणा की कि यीशु मर चुका है। तब उन्होंने बरछे से उसका पंजर बेधा। इसके बाद यीशु की लोथ को क्रूस पर से उतारकर, यहूदियों की रस्म के अनुसार, एक कब्र के भीतर रखा गया और कब्र के मुँह पर एक भारी पत्थर रखकर उसे बन्द कर दिया गया। फिर हम देखते हैं, कि क्योंकि

यीशु ने पूर्वघोषणा की थी, कि वह तीसरे दिन जी उठेगा, इस कारण यहूदियों ने रोमी सरकार की अनुमति लेकर कब्र के ऊपर कड़ा पहरा बैठाया। क्योंकि वे डरते थे कि कहीं उसके चेले आकर देह को निकालकर न ले जाएं और कहने लगें कि वह जी उठा है।

परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी यीशु अपने कहे अनुसार तीसरे दिन जी उठा। परन्तु, अब थोड़ी देर के लिए यदि हम यह मान भी लें, कि यीशु क्रूस पर पूर्णरूप से नहीं मरा था, तो जिस हालत में उसे कब्र के भीतर गाड़ा गया था, उसे दृष्टिकोण में रखकर क्या यह सम्भव हो सकता है, कि उसमें तीसरे दिन इतनी शक्ति आ गई हो कि वह कब्र के ऊपर धरे बड़े पत्थर को स्वयं हटाकर उस में से बाहर निकल आया? और यदि हम यह भी मान लें, तो वह उन रोमी सिपाहीयों की आंखों से बचकर कैसे निकल गया जो उसकी कब्र पर पहरा दे रहे थे?

परन्तु नहीं! यीशु परमेश्वर की सामर्थ से मुर्दों में से जी उठा और वह आज भी जीवित है। वह आपका उद्धारकर्त्ता तथा मुक्तिदाता बनना चाहता है। क्या आप उस पर विश्वास करते हैं?

—: ० :—

मसीह का दोबारा आना

(१)

मित्रो,

आज हम एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात के ऊपर विचार करने जा रहे हैं, और मेरा विश्वास है कि हमेशा की तरह आप आज के पाठ को भी बड़े ही ध्यान से सुनेंगे। आप को याद होगा, कि अपने पिछले अध्ययन में हमने प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, और फिर उसके जी उठने के बारे में देखा था। अर्थात, हमने देखा था, कि किस प्रकार आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व परमेश्वर के पुत्र यीशु ने उसकी सामर्थ से संसार में जन्म लिया, और फिर किस प्रकार वह बड़ा हुआ, और किस तरह उस ने बड़े-बड़े आश्चर्य के कामों को करके यह प्रमाणित किया कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। परन्तु जैसा कि हमने देखा था, कि यथार्थ में यीशु का पृथ्वी पर आने का उद्देश्य यह था कि वह परमेश्वर की मनसा के अनुसार पृथ्वी पर सारे लोगों के लिये, उनके पापों के कारण उनके स्थान पर पाप का दन्ड अपने ऊपर उठाए, और उनका प्रायश्चित बनकर क्रूस के ऊपर अपने आपको बलिदान करे। सो इस प्रकार हमने देखा था, कि यीशु मसीह हम सबके पापों के कारण मारा गया। परन्तु, फिर अपने पिछले पाठ में हमने इस विशेष बात को देखा था, कि क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, और वह स्वर्ग से पृथ्वी पर हमारे पापों का प्रायश्चित बनकर हमारा कर्जा चुकाने के लिये आया था, इसलिए जब उसने मृत्यु दन्ड उठाकर क्रूस के ऊपर हमारा दाम भर दिया, और जब उसकी लोथ को लेकर लोगों ने कब्र के भीतर दफ़ना

दिया, तो यीशु परमेश्वर की सामर्थ से तीसरे दिन फिर जी उठा। और यह अत्यन्त ही आश्चर्यपूर्ण घटना किसी कोने में नहीं घटी परन्तु जिस प्रकार यीशु खुले आम सबके सामने मारा गया और गाड़ा गया, वैसे ही वह जी भी उठा। उस समय सारा यरुशलेम यह जानकर आश्चर्य में पड़ गया कि जिस व्यक्ति को तीन दिन पहिले उन्होंने क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मारा था, वह फिर से जी उठा है। और इसी तरह, हमने यह भी देखा था कि जी उठने के बाद यीशु चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा और समय-समय पर वह अपने चेलों तथा अन्य लोगों को दिखाई देता रहा। और फिर अन्त में वह अपने चेलों के देखते-देखते स्वर्ग पर उठा लिया गया और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया।

परन्तु जब यीशु स्वर्ग पर उठा लिया गया, तो पवित्र बाइबल बताती है, कि उसके चेले इस घटना से अत्यन्त ही आश्चर्य चकित होकर जब उसको जाते हुए आकाश की ओर ताक रहे थे, तो एकाएक, "दो पुरूष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। और कहने लगे; हे गलीली पुरूषो,तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।" (प्रेरितों १ : १०-११)।

सो यहां से जिस आवश्यक बात को हम देखते हैं, और जिस बात के ऊपर हम आज विचार करने जा रहे हैं, वह यह है कि प्रभु यीशु मसीह एक दिन फिर वापस आएगा। परन्तु शायद आप जानना चाहें, कि प्रभु यीशु दोबारा वापस क्यों आएगा ? उसके आने का क्या उद्देश्य होगा ? वह कब वापस आएगा ? और उसके आने पर क्या-क्या होगा ? शायद आप पूछें, कि क्या बाइबल इस बारे में हमें बताती है ?

जी हां, बाइबल हमें इन बातों के बारे में बड़े ही स्पष्ट रूप से बताती है। सब से पहिले, हम एक जगह देखते हैं कि प्रेरित पौलुस

परमेश्वर से प्रेरणा पाकर यीशु के अनुयायीयों को लिखकर कहता है, "हे भाईयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, (अर्थात मर गए हैं), अज्ञात रहो, ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाई शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

"पर हे भाईयो, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा।" (१ थिस्सलुनीकियों ४ : १३-१८; ५ : १-३)।

फिर वह आगे कहता है, "क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें बदले में क्लेश दे। और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी

शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा।" (२ थिस्सलुनीकियों १ : ६-१०)।

फिर एक जगह हम यूँ पढ़ते हैं, कि जब कुछ लोग प्रेरितों के दिनों में प्रभु के दोबारा आने के बारे में कुछ संदेह करने लगे, तो पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस के द्वारा उन्हें यह चेतावनी दी, "हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर हैं, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" (२ पतरस ३ : ८-१०)।

सो इस तरह हम देखते हैं, कि पवित्र शास्त्र हमें बड़े स्पष्ट शब्दों में प्रभु यीशु के दोबारा आने के बारे में बताता है। परन्तु इस प्रश्न के उत्तर में, कि वह कब वापस आएगा? पवित्र वचन कहता है, कि वह एक चोर की नाईं आएगा, अर्थात जैसे एक चोर बिना कोई सूचना दिए अचानक आ जाता है, उसी प्रकार प्रभु भी एक दिन एकाएक आ जाएगा। फिर हम देखते हैं, कि प्रभु के आने पर सब का पुनःरूत्थान होगा, और प्रभु सब का न्याय करेगा। और जबकि सारे अधर्मी अपने अधर्म के कारण अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे, धर्मी ऊपर उठा लिये जाएंगे और वे हवा में प्रभु से ऊपर मिलेंगे ताकि प्रभु के साथ उसके अनन्त राज्य में प्रवेश करें। और हम यह भी देखते हैं, कि क्योंकि धर्मी प्रभु से मिलने के लिये ऊपर उठा लिये जाएंगे इसलिए प्रभु इस बार

इस पृथ्वी पर वापस नहीं आएगा। और यह बात प्रेरित पतरस के इस कथन से और भी स्पष्ट हो जाती है, जैसा कि उसने कहा, कि जब प्रभु वापस आएगा तो "उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" (२ पतरस ३:१०)। सो निश्चित ही, क्योंकि पृथ्वी और उस पर के काम सब जल जाएंगे अर्थात नष्ट हो जाएंगे, इस कारण प्रभु इस पृथ्वी पर वापस नहीं आएगा। परन्तु प्रेरित आगे कहता है कि "जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसा मनुष्य होना चाहिए।" (२ पतरस ३ : ११)।

मित्रो, क्या आप प्रभु के उस महान दिन का सामना करने के लिए तैयार हैं, जबकि वह प्रत्येक मनुष्य का न्याय करने के लिये, और धर्मी वा अधर्मियों को उनका प्रतिफल देने के लिये आएगा? क्या आप विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु आपके अधर्म के कामों के हेतु बलिदान हुआ? प्रभु यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)।

प्रभु आप को बुद्धि दे, कि आप अवसर को बहुमूल्य समझें। उसी की आशीष आप पर होती रहे।

—: ० :—

मसीह का दोबारा आना
(२)

मित्रो,

यह अवसर हम सब के लिये वास्तव में बड़ा ही मूल्यवान अवसर है, क्योंकि यह वह समय है जबकि हम अपने ध्यानों को पृथ्वी पर की वस्तुओं पर से हटाकर आत्मिक वा स्वर्गीय बातों की ओर लगाते हैं। और मेरा विश्वास है, कि अब जबकि हम अपने आज के पाठ को देखने जा रहे हैं, आप बड़ी ही गम्भीरता के साथ इन बातों को सुनेंगे।

आपको याद होगा, कि अभी कुछ ही दिन हुए जबकि हमने प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के बारे में, और फिर उसके जी उठने और स्वर्गारोहण के बारे में देखा था। और अपने पिछले पाठ में हमने इस विशेष बात के ऊपर विचार किया था कि जगत के पाप के कारण अपने आपको बलिदान करने के बाद जब यीशु फिर से, परमेश्वर की सामर्थ से, मुर्दों में से जी उठा, और पृथ्वी पर कुछ समय रहने के बाद जब वह अपने चेलों के देखते-देखते स्वर्ग पर वापस उठाया जा रहा था, तो परमेश्वर ने उन पर प्रगट करके कहा था, कि यही यीशु एक दिन फिर वापस आएगा। (प्रेरितों १ : १०-११)। इसी सच्चाई की पुष्टि प्रेरित पौलुस एक जगह यूं कहकर करता है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०-३१)।

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान से कुछ ही समय पहिले, प्रभु यीशु ने अपने चेलों से एक स्थान पर कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : १-३)।

सो इन बातों से हम बड़ी ही स्पष्टता से यह देखते हैं कि प्रभु यीशु एक दिन अवश्य वापस आएगा। किन्तु वह कब वापस आएगा ? क्या बाइबल इस विषय में कुछ बताती है ? वर्षों से हम देख रहे हैं, कि अनेकों लोगों ने प्रभु के आने के एक निश्चित समय का अनुमान लगाया है, और यहां तक कि उन्होंने प्रभु के आने के एक निश्चित दिन तक की घोषणा की है। परन्तु वे सब के सब हमेशा झूठे प्रमाणित हुए। फिर, कुछ लोगों का विचार है, कि प्रभु के आने से पहिले पृथ्वी पर अनेकों ऐसी बातें होंगी, अर्थात घटनाएं घटेंगी, जो इस बात का निशान ठहरेंगी कि अब प्रभु आ रहा है। और लोगों की यह धारणा बाइबल में पाई जानेवाली मत्ती की पुस्तक के चौबीसवें अध्याय और लूका की पुस्तक के इक्कीसवें अध्याय में लिखी उन बातों पर आधारित हैं, जिनकी घोषणा प्रभु यीशु ने यरुशलेम नगर के नाश होने के बारे में की थी, और जो सन् सत्तर ई० स० तक वैसे ही पूरी भी हुईं। यदि इन दोनों अध्यायों को आप अपनी बाइबल में ध्यान से पढ़ें, तो आप देखेंगे कि जब यीशु के चेले उसे यरुशलेम में बने एक मन्दिर की रचना वा सुन्दरता दिखा रहे थे, तो प्रभु यीशु ने उनसे कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा। इस पर चेलों ने प्रभु से दो प्रश्न पूछे : अर्थात पहिले तो यह, कि ये बातें कब होंगी, अर्थात् कब यरूशलेम में पत्थर पर पत्थर न छूटेगा और सब नाश होगा ? और दूसरे यह, कि

तेरे आने का और जगत के अन्त का चिन्ह क्या होगा ? सो पहिले प्रश्न के उत्तर में प्रभु ने उन्हें बहुत से चिन्ह बताए जिनका होना यरुशलेम के नाश से पहिले आवश्यक था, अर्थात लड़ाईयां, अकाल, अधर्म, उपद्रव, इत्यादि। और इतिहास हमें बताता है कि ये सब बातें सन ७० ई० में, यरुशलेम के नाश होने से पूर्व, यूं ही पूरी हुईं। क्योंकि प्रभु ने उन लोगों से कहा था कि "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।" (मत्ती २४ : ३४)। और वास्तव में ये सब बातें उसी पीढ़ी में पूर्ण हुईं।

परन्तु, दूसरे प्रश्न के उत्तर में, अर्थात तेरे आने का और जगत के अन्त का चिन्ह क्या होगा ? प्रभु ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में ये सब बातें कहीं : "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल प्रलय मे पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें ब्याह शादी होती थी। और जब तक जल प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा···इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा तो वह जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता। इसलिए तुम भी तैयार रहो, जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।" और फ़िर उसने एक दृष्टान्त देकर यूँ कहा, "सो वह विश्वास-योग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे ? धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। मैं तुम से सच कहता हूँ ;

वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार, ठहराएगा। परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है, और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कडों क साथ खाए-पिए। तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा जब वह उसकी बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी कि वह न जानता हो, और उसे भारी ताड़ना देकर, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा: वहाँ रोना और दांत पीसना होगा।" (मत्ती २४ : ३६-३९ तथा ४२-५१)।

सो यहाँ से हम सीखते हैं, कि यद्यपि यीशु एक दिन अवश्य ही वापस आएगा। परन्तु प्रभु ने स्वयं कहा कि, जब वह वापस आएगा उस दिन या उस घड़ी के बारे में परमेश्वर को छोड़ और कोई नहीं जानता। और अपनी इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के दृष्टिकोण से प्रभु ने नूह के समय की जल-प्रलय का उदाहरण देकर कहा, कि जिस प्रकार एका-एक जल-प्रलय आकर उस समय के लोगों को बहा ले गया वैसे ही वह भी अचानक आ जाएगा। और उसने यह भी कहा, कि जैसे रात के समय चोर बिना किसी सूचना के उस समय आ जाता है जबकि लोग निश्चिन्त पड़े सो रहे होते हैं, वैसे ही उसका आना भी होगा।

इसीलिये, प्रेरित पतरस भी एक जगह यूं कहता है, "परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाई आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे।" (२ पतरस ३ : १०)। किन्तु, हम जानते हैं, कि आज कुछ लोगों का यह भी विश्वास है, कि जब प्रभु आएगा तो वह इस पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक राज्य करेगा। और उनका यह विश्वास भी पवित्र शास्त्र को ठीक ढंग से न समझने के कारण है। परन्तु जैसा कि अभी हमने देखा कि, जब प्रभु आएगा तो उस समय पृथ्वी और पृथ्वी पर के काम जल जाएँगे, अर्थात लुप्त हो जाएंगे। सो जबकि प्रभु के आने पर न पृथ्वी होगी और न

उस पर का कोई काम होगा, तो हम निश्चय ही जानते हैं कि वह कदापि इस पृथ्वी पर न आएगा। किन्तु जैसा कि हमने अपने पिछले पाठ में देखा था कि प्रभु के आने पर उसके धर्मी लोग उससे ऊपर हवा में मिलेंगे (१ थिस्सलुनीकियों ४ : १३-१८), ताकि वे अपने प्रभु के साथ उसकी प्रतिज्ञा अनुसार, उसके राज्य में प्रवेश करें। (यूहन्ना १४ : १ - ३)।

वास्तव में, प्रभु भविष्य में राज्य करने नहीं आ रहा है, परन्तु सच्चाई यह है, कि वह अभी राज्य कर रहा है। वे लोग जो उसमें विश्वास लाकर, और पाप से अपना मन फिराकर, उसकी आज्ञानुसार, बपतिस्मे के द्वारा अपने पुराने मनुष्यत्व को जल-रूपी कब्र के भीतर दफ़नाकर, उसके अनुयायी बन जाते हैं, यीशु अपने वचन के द्वारा उनके मनों पर राज्य करता है। और एक दिन वह अपने उन्हीं लोगों को लेने के लिये वापस आ रहा है।

सो मेरा विश्वास है, मित्रो, कि आप इन बातों के ऊपर ध्यान देंगे। हमें चाहिए कि हम प्रभु के उस महान दिन के आने से पहिले उस से मिलने के लिये अपने आपको तैयार करें। परन्तु क्या उसके आने पर आप उस से मिलने के लिये तैयार होंगे ?

—: ० :—